आप नमाज़ कैसे पढें ?
JAMIA KHAIRUL ULOOM ASADABAD UDGAON
जामिया खैरुल उलूम, असादाबाद, उदगांव.
गट नं. १०९९, शिरोळ रोड, ता. शिरोळ, ज़ि. कोल्हापूर. (महाराष्ट्र)

जामिया खैरुल उलूम, उदगांव.

मसाइल के सिलसिले मे मुफ्तियाने किराम से रुजू करें

जिम्मेदाराने जामिया :-

मौलाना अहमदुल्लाह साहिब इराणी,
उदगांव
मोबा. 8806243767

हाफिज अब्दुस्समद साहिब इराणी,
उदगांव
मोबा. 9422614004

मौलाना अब्दुलमजीद साहिब,
इचलकरंजी
मोबा. 9822976522

मौलाना अब्दुर्रहमान साहिब, उदगांव
मोबा. 9421108481

हाफिज़ नुरुलहुदा साहिब, मिरज
मोबा. 9860540587

मौलाना नासिर साहिब, उदगांव
मोबा. 8600118836

जनाब दस्तगीर साहिब मेस्त्री,

मुफ्तियाने जामिया :-

मुफ्ती बद्रुद्दीन साहिब, बार्डी
मोबा. 9421030886

मुफ्ती युसुफ साहिब, इचलकरंजी
मोबा. 9689693435

मुफ्ती मुहम्मद साहिब, कोल्हापूर
मोबा. 9975838594

मुफ्ती सिद्दीक साहिब, नवेखेड
मोबा. 9922098249

मुफ्ती ज़ाकिर साहिब, उदगांव
मोबा. 9595701787

मुफ्ती निअमतुल्लाह साहिब इराणी,
उदगांव
मोबा. 9503081157

मुफ्ती इरफान साहिब, मिरज
मोबा. 9764062061

खादिमे मदरसा :-

हाफिज़ नसरुद्दीन साहिब 9028760956
जनाब अब्दुलकादर भाई 9270626130

صَلُّوا كَمَا رَأَيْتُمُونِي أُصَلِّي (الحديث)

तुम मुझे जिस तरह नमाज़ पढते हुये देखे हो उसी तरह तुम भी नमाज़ पढा करो ।

आप नमाज़ कैसे पढें ?

ज़ेरे सरपरस्ती

हज़रत अक्दस मौलाना मुफ्ती अहमद साहब खानपूरी (दामत बरकातुहुम)

सरपरस्त, जामिया हाज़ा व शैखुल हदीस जामिया इस्लामिया तालीमुद्दीन डाभेल(गुजरात)

ज़ेरे एहतमाम

मौलाना अहमदुल्लाह हज़रत मौलाना असअदुल्लाह साहिब इराणी (रह.)

मोहतमीम जामिया खैरुल उलुम असादाबाद, उदगांव.

पब्लिशर

जामिया खैरुल उलूम, असादाबाद, उदगांव.

तालुका शिरोळ, जि. कोल्हापूर. महाराष्ट्र, इंडिया

तफ्सीलात

किताब का नाम : आप नमाज़ कैसे पढें ?

पब्लिश तारीख : शाबान १४३७ हि. मुताबिक मई २०१६ इ.

ताअदाद : तीन हज़ार

नाशिर : जामिया खैरुल उलुम, उदगांव.

आप नमाज़ कैसे पढें

जामिया का मुख्तसर तआरुफ़

जामिया हाज़ा महज़ अल्लाह के फ़ज़्ल व करम और उसकी नुसरत पर तक़रीबन ४७/साल से इशाअते सुन्नत,तालीमे दीन,दावत व तबलीग़ और तज़किए नुफ़ूस की ख़िदमत ब हुस्नो ख़ूबी अंजाम दे रहा है,सभी हज़रात क़बूलियत की दुआ भी फ़र्माते रहें।

इस वक़्त जामिया में १९६/ तलबा कुरआन व हदीस की तालीम् और अख़्लाक़ी तर्बीयत हासिल कर रहे हैं, इन तमाम तलबए किराम का खाना पीना और उन की तमाम ज़रूरियात को मुकम्मल जामिया ही बर्दाश्त करता है, दो वक़्त का नाश्ता, दो वक़्त का खाना, माहाना वज़ीफ़ा, नादार व ग़रीब तलबा के लिए आने जाने का किराया, कपड़े, साबुन, सर्दी में तमाम तलबा के लिए चादर वग़ैरा का भी इंतिज़ाम किया जाता है, ये तमाम सहूलतें तलबा के लिए रख्खी गई हैं; ताके तलबा यकसूई और इत्मिनान के साथ, दुन्यवी ज़रूरियात से बे फ़िक्र हो कर इल्मे दीन के हूसूल में लगे रहें।

इस के इलावा नहाने के लिए गर्म पानी, पीने के लिए फ़िल्टर किया हुवा कूलर का ठंडा पानी मुहय्या है,जिस के लिए बड़ा फ़िल्टर और वाटर कूलर भी लगाया गया है, हत्तल् इम्कान तलबए किराम की तमाम ज़रूरियात मिन् जानिबे जामिया पूरी की जाती हैं।

नए तलबा से दाख़ला फ़ीस १५०/ रूपये के अलावा कोई फ़ीस नही ली जाती; अलबत्ता अगर कोई साहिबे हैसियत आदमी अपने बच्चे या ज़ेरे सरपरस्त को अपनी हैसियत के मुताबिक़ तआम की फ़ीस देकर पढाना चाहे तो बेहतर है, तलबए किराम के लिए तआम व क़ियाम,इलाज व मुआलजा, बीमार तलबा के लिए डॉक्टर व दवाई वग़ैरा का ख़र्च भी इदारा ही बर्दाश्त करता है, इस वक़्त जामिया में २५/ असातिज़ा - नीज़ २/ अफ़राद पर मुश्तमिल् दफ्तरी अमला और १९/ मुलाज़िमीन काम कर रहै हैं, असातिज़ा व मुलाज़िमीन के लिए माकूल तनख़्वॉह के अलावा रहने के लिए मकानात मुफ्त दिए गए हैं।

जामिया के तमाम अख़राजात का दारो मदार नुसरते इलाही और आप हज़रात की दुआ और माली तआवुन पर है, माहे रमज़ान में ज़कात, सदक़ा, फ़ितरा, और बक़रईद में कुर्बानी की खालें यही चीज़ें जामिया की आमदनी का ज़रीया हैं, अल्लाह तबारक व तआला अपने ख़ज़ानए ग़ैब से मुकम्मल कफ़ालत फ़र्माकर अपने बंदों को तआवुने माली और दुआ की तौफ़िक़ अता फ़र्माए, और मददगारों को ख़ूब बरकतों से नवाज़े। आमीन

जामिया की निगरानी में चलने वाले मकातिब् :

उदगांव, जयसिंगपूर, आलास, इचलकरंजी, हातकलंगले, बावची, कुंडलवाडी, शेडशाळ, बस्तवाड, बहादुरवाडी, और ढवळी में जामिया की ज़ेरे निगरानी कई मकातिब चल रहे हैं।

शोबए दावत् व तब्लिग़् :

जामिया में क़दीम दस्तूर के मुताबिक़ हलक़े के ज़िम्मेदारों के मश्वरे से हर हफ्ता जुमेरात के रोज़ बाद नमाज़े असर २४/ घंटे की जमात निकलती है, मश्वरे से तय शुदा रुख़ के मुताबिक़ जमातें जाकर जुमा के रोज़ असर के बाद वापस होती हैं, और रमज़ान की छुट्टीयों में अशरे और चिल्ले की जमातों की तश्कील् भी होती है।

ख़ानक़ाही निज़ाम :

अल् हम्दुलिल्लाह! उम्मत की सलाह् व फ़लाह् की ग़र्ज़ से हज़रत मौलाना अबुल् ख़ैर अब्दुस्समद साहब ईरानी रह. और मुर्शिदुल् उलमा हज़रत अक़दस मौलाना मुफ्ती अहमद साहब ख़ानपूरी दामत बरकातुहुम् के हुक्म और हज़रत मौलाना मुहम्मद असअदुल्लाह साहब ईरानी रह. के क़दीम दस्तूर के मुताबिक़ ख़ानक़ाही निज़ाम बराबर जारी है और बेअत् व इर्शाद का सिल्सिला भी हमेशा जारी रहता है, हर साल रमज़ानुल् मुबारक के आख़री अशरे का एतेकाफ़ होता है, जिस में तक़रीबन् ३००/ मुरीदीन व सालिकीन इस्लाही मजालिस में शरीक रहते हैं, हज़रत मौलाना के इंतिक़ाल के बाद भी ये सिल्सिला बराबर जारी है।

जामिया का दारुल् इफ्ता वल्इर्शाद :

रोज़ मर्रा के मसाइल् मालूम करने के लिए हमेशा अवामुन्नास, उलमाए किराम और मुफ्तियाने इज़ाम की तरफ़ रुजू करते हैं, इसी लिए हर बड़े इदारे में बाक़ायदा दारुल् इफ्ता क़ायम होता है, गुज़िश्ता चार पाँच साल पहले जामिया हाज़ा में भी ये शोबा क़ायम हुवा है, ये शोबा सवालात के जवाबात पूरी तहक़ीक़ व तफतीश के बाद फ़राहम् करता है, मुसलमानों के इन्फ़िरादी व इज्तिमाई मसाइल में तहरीरी फ़तावा की सूरत में उन की रहनुमाई करता है, इमसाल (३६) और अब तक कुल् (११७) सवालात के जवाबात दिए गए हैं और कई मीरास् के मामलात हल् किए गए हैं नीज़ इस के अलावा कई अफ़राद् ख़ूद हाज़िर होकर ज़ुबानी मसाइल मालूम करते हैं और फ़ोन के ज़रिए भी मसाइल् में लोगों की शरई रहनुमाई की जाती है।

लिहाज़ा अवामुन्नास से गुज़ारिश है के आप अपने दीनी मसाइल को हल् करने के लिए जामिया से बराहे रास्त राब्ता क़ायम करें, या फिर जो भी सवाल पूछना हो साफ़ तौर पर लिख्खें, और अपना जवाबी लिफ़ाफ़ा भी पूरे पते के साथ भेज दें, इंशाअल्लाह आप को जवाब दिया जाएगा।

जामिया के सालाना मसारिफ़ :

दिन ब दिन ज़रूरत की चीज़ों में बढती हुई क़ीमतों की वजह् से सालाना मसारिफ़ भी बढते जा रहे हैं; मगर खुदा वंदे कुद्दूस के फ़ज़्ल व करम् और मुख़य्यीर हज़रात की सखावतों से काम चल रहा है।

इमसाल भी असातिज़ा की तनख़्वॉहों, किताबों और दवाई का कुल ख़र्च ३९३२३१४/- रुपये हुए। अनाज, दूध, गॅस का ख़र्च १५७१८४६/- रुपये हुए।

उस के अलावा साल भर में होने वाले छोटे बड़े जलसों का ख़र्च, सफ़र ख़र्च, जनरेटर, हार्डवेअर, सरकारी कामों के लिए १००४४८७/- रुपये ख़र्च हुए।

इस साल जामिया का कुल् ख़र्च ६५०८६४७/ रूपये हुवा है।

दारुल् कुरआन का बक़िया तामीरी ख़र्च ३३१२७१६/ रूपये हुवा है।

अज़ाइम् :

गुज़िश्ता दो साल पहले हज़रत वाला के हाथों दारुल् कुरआन की संगे बुनियाद रख्खी गई थी, अल्हम्दुलिल्लाह वह इमारत मुकम्मल होकर उस में तालीम भी शुरू हो गई, अल्लाह तआला इस तामीर में हिस्सा लेने वाले तमाम अहबाब को अपनी शायाने शान बेहतरीन बदला अता फ़र्माए आमीन।

इंशाअल्ला अब हॉस्टेल और एक लायब्ररी की तामीर का इरादा है, चूँके अब तक कुछ बड़े तलबा दरसगाहों में और छोटे तलबा हॉल में आराम करते हैं, लिहाज़ा अब मुस्तक़िल् तलबए किराम के लिए रहाइशी कमरों की और मुतालेअ् के लिए एक लायब्ररी की ज़रूरत है, उस के लिए तमाम हज़रात दुआ और तआवुन दोनों फ़र्माते रहें। अल्लाह तआला उस के लिए अस्बाब मुहय्या फ़र्माए। आमीन

अल्लाह तआला तमाम मुआविनीन और चंदा देने वालों और जामिया से तअल्लुक़े मुहब्बत और हम्दर्दी रखने वालों को अपनी शायाने शान बेहतरीन बदला अता फ़र्माए, उन को बरकतों और रहमतों से नवाज़ कर दोनों जहाँ में कामियाबी अता फ़र्माए। आमीन

फ़क़त् वस्सलाम्

मौलाना अहमदुल्लाह साहब ईरानी

मोहतमिम् जामिया ख़ैरुल् उलूम असअदाबाद, उदगांव कोल्हापूर

तहारत्

वुज़ू के फ़राईज़् :

वुज़ू में चार फ़र्ज़ हैं। (१) पेशानी के बालों से ठुड्डी के नीचे तक और एक कान से दुसरे कान तक मुह धोना। (२) दोनों हाथों को कुहनियों समेत् धोना। (३) चौथाई सर का मसह् करना। (४) दोनों पाँव टख्नों समेत् धोना। (तालीमुल् इस्लाम् हिस्सा दुव्वम/२१)

वुज़ू की सुन्नतें :

वुज़ू में तेरह् सुन्नतें हैं। (१) निय्यत् करना। (२) बिस्मिल्लाह् पढ़ना। (३) पहले तीन बार दोनों हाथ गट्टों तक धोना। (४) मिस्वाक् करना। (५) तीन बार कुल्ली करना। (६) तीन बार नाक में पानी डालना। (७) डाढ़ी का ख़िलाल करना। (८) हाथ पाँव की उँगलियों का ख़िलाल करना। (९) हर उज़्व को तीन बार धोना। (१०) एक बार तमाम् सर का मसह् करना (यानी भीगा हुवा हाथ फेरना)। (११) दोनों कानों का मसह् करना। (१२) तर्तीब से वूज़ू करना । (१३) पे दर पे वुज़ू करना के एक उज़्व ख़ुश्क (सुखने) न पाये के दुसरा धोले। (तालीमुल् इस्लाम् हिस्सा दुव्वम/२१)

वुज़ू के मक्रूहात् :

वुज़ू में आठ मक्रूहात् हैं। (१) सुन्नत् के ख़िलाफ़् वुज़ू करना। (२) ज़रूरत् से ज़्यादा पानी ख़र्च करना। (३) ज़रूरत् से कम पानी ख़र्च करना। (४) वुज़ू के दरमियान् दुनिया की बातें करना। (५) मुँह पर पानी ज़ोर से मारना। (६) आज़ाए वुज़ू (बदन के जो हिस्से धोये जाते हैं) को तीन बार से ज़्यादा धोना।(७) सर का मसह् नये पानी से तीन बार करना। (८) वुज़ू के बाद हाथों का पानी छिड़कना। (इस्लामी अस्बाक़् /३७)

वुज़ू को तोड़ने वाली चीज़ें :

वुज़ू को तोड़ने वाली चीज़ें आठ हैं। (१) पेशाब या पाख़ाना करना या इन दोनों रास्तों से किसी और चीज़् का निकल्ना। (२) रीह् यानी हवा का पीछे से निकल्ना। (३) बदन के किसी मक़ाम् से ख़ून या पीप् का निकल्कर बह जाना। (४) मुँह भर के क़य (उल्टी) करना। (५) लेटकर या सहारा लगाकर सो जाना। (६) बीमारी या और किसी वजह् से बेहोश हो जाना। (७) मज्नून् यानी दीवाना हो जाना। (८) नमाज़् में क़हक़हा मारकर हँसना।(तालीमुल् इस्लाम् हिस्सा दुव्वम/२२)

वुज़ू के आदाब :

(१) जिस ज़ात के लिए तहारत हासिल् कर के उस के रू ब रू (सामने) पेश होना है उस की हैबत व दबदबे का इस्तिहज़ार (ख़याल्) पैदा करना। (२) हत्तल् इम्कान बा वुज़ू रहने का एहतिमाम (पाबंदी) करना। (३) पानी में इसराफ़् (फ़ुज़ूल् ख़र्ची) न करना। (४) क़िब्ला रुख़ होकर वुज़ू करना। (५) वुज़ू के वक़्त निय्यत करना।(६) साफ़ सुथरी जगह् पर वुज़ू करना। (७) बिस्मिल्लाह् पढ़कर वुज़ू करना। (८) दाहनी तरफ़ से शुरू करना। (९) तर्तीब से वुज़ू करना (१०) पे दर पे वुज़ू करना। (११) आज़ाए वुज़ू को मल् मल् कर धोना। (१२) अच्छे तरीक़े से वुज़ू करना। (१३) वुज़ू करते वक़्त दुन्यवी बातें न करना। (१४) वुज़ू से पहले तीन् मर्तबा हथेलियों को धोना। (१५) वुज़ू करते हुएः

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ ذَنْبِیْ، وَوَسِّعْ لِیْ فِیْ دَارِیْ، وَ بَارِكْ لِیْ فِیْ رِزْقِیْ

और आज़ाए वुज़ू की मन्क़ूल् (जो हदीस से साबित् हैं) दुआएँ पढ़ते रहना। (१६) मिस्वाक करना। (१७) तीन् बार कुल्ली करना। (१८) तीन् बार नाक में पानी चढ़ाना। (१९) मूँह और नाक में दाएँ हाथ से पानी डाल्ना और फ़िर बाएँ हाथ से नाक साफ़ करना। (२०) ग़ैर रोज़ेदार का कुल्ली और नाक में पानी डाल्ने में मुबालग़ाह (जहाँ तक पहूँच सकता है पहूँचाने का एहतिमाम) करना। (२१) चेहरा और हाथ धोते वक़्त चुल्लू से पानी लेना। (२२) चेहरा धोते वक़्त पेशानी से शुरू करना। (२३) चेहरे पर पानी ज़ोर से न मारना। (२४) ग़ोशए चश्म (आँख के किनारे पर) हाथ फ़ेरना। (२५) डाढ़ी का ख़िलाल् करना। (२६) हाथ और पैर की उँगलियों के सिरे से धोने की इब्तिदा करना। (२७) कुहनियों और एड़ियों पर एहतिमाम से पानी बहाना। (२८) उँगलियों का ख़िलाल् करना। (२९) पैरों की उँगलियों का ख़िलाल् करना (बाएँ हाथ की) छोटी उँगली से करना। (३०) तीन मर्तबा आज़ाए वुज़ू को धोना। (पानी की कमी की वग़ैरह् आज़ार की वजह् से एक या दो मर्तबा पर भी इक्तीफ़ा किया जा सकता है।) (३१) आज़ाए वुज़ू को तीन् मर्तबा से ज़्यादा न धोना। (३२) पूरे सर का मसह् करना। (३३) मसह् की इब्तिदा पेशानी से करना और दोनों हाथों से मसह् करना। (३४) कानों के अँदर और बाहर से मसह् करना। (३५) कान् का मसह् करते वक़्त कान् के सूराख़ में छोटी उँगली डालना। (३६) जाए इस्तिंजा (नजासत निकलने की जगह्) के साथ लगे हुए कपड़े पर पानी छिड़कना (ख़ुसूसन् उस के लिए जो वसवसे का मरीज़् है)। (३७) (अगर लोटे या बरतन्

से वुज़ू कर रहा हो तो) वुज़ू का बचा हुवा पानी खड़े हो कर पीना। (३८) वुज़ू के बाद आसमान् की तरफ़ देखते हुए ये दुआ पढ़ना:

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ،
اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِيْ مِنَ التَّوَّابِيْنَ وَاجْعَلْنِيْ مِنَ الْمُتَطَهِّرِيْنَ۔

(३९) वुज़ू के बाद तौलिये का इस्तिअ्माल् करना। (४०) वुज़ू करने के बाद नमाज़् शुरू करने तक पुर सुकून् रहना। (४१) तहिय्यतुल् वुज़ू पढ़ना। (सुनन् व आदाब /१०९ से ११६ तक)

मिस्वाक के आदाब:

(१) ब कसरत (ज़्यादा से ज़्यादा) मिस्वाक करना,बिल्ख़ुसूस वुज़ू के वक़्त मिस्वाक करना। (२) मिस्वाक दाएँ हाथ से पकड़ना। (३) मिस्वाक करने में दाहनी तरफ़ से इब्तिदा करना। (४) चौड़ाई में मिस्वाक करना। (५) मिस्वाक कम अज़् कम तीन् मर्तबा अलग अलग पानी ले कर करना।(६) मिस्वाक धोकर इस्तिअ्माल् करना और इस्तिअ्माल् करके धो लेना। (७) अगर माज़ूरी की वजह् से मिस्वाक को नरम करने के लिए न चबा सकता हो तो दुसरे से चबवाकर मिस्वाक करना। (८) मिस्वाक न हो तो उँगलियों को उस का क़ायम मक़ाम (उस के जैसा)समझना; मगर उस की आदत न बनाना। (९) बच्चों और मातहतों (अपनी ज़िम्मेदारी में रहने वाले) को भी मिस्वाक की तालीम देना। (१०) मुतअद्दद अश्ख़ास (चंद लोगों) की मौजूदगी में अगर मिस्वाक देना हो तो बड़े आदमी को मिस्वाक पेश करना। (सुनन् व आदाब/११७)

मिस्वाक पकड़ने का तरीक़ा:

दाएँ हाथ की सब से छोटी उँगली को मिस्वाक के नीचे रख्खे,और उसके बराबर वाली और दर्मियान् वाली और शहादत वाली उँगली को मिस्वाक के ऊपर रख्खे,और अँगूठा मिस्वाक के सिरे की तरफ़ नीचे रख्खे।

नोट : दो मोक़ों पर मिस्वाक करने का ख़ुसूसी एहतिमाम करना चाहिए:

(१) दांत का पीला पड़ जाना। (२) मूँह से बदबू आना। (सुनन् व आदाब/११७)

तयम्मुम् के फ़राइज़्:

तयम्मुम् में तीन् फ़र्ज़ हैं। (१) अव्वल निय्यत करना। (२) दोनों हाथ मिट्टी पर मार कर मुँह पर फेरना। (३) दोनों हाथ मिट्टी पर मार कर दोनों हाथों को कुहनियों समेत मल्ना। (तालीमुल् इस्लाम् हिस्सा सुव्वम/५९)

तयम्मुम् को तोड़ने वाली चीज़ें:

तयम्मुम् को तोड़ने वाले चीज़े दो हैं। (१) जिन् चीज़ों से वुज़ू टूट जाता है उन् से तयम्मुम् भी टूट जाता है, और जिन् चीज़ों से गुस्ल टूट जाता है उन् से तयम्मुम् भी टूट जाता है। (२) जिस उज्र के सबब। मसलन् पानी न मिलने की वजह् से या बीमारी की वजह् से तयम्मुम् किया था वो उज्र ख़तम हो जाए तो तयम्मुम टूट जाता है। (इस्लामी अस्बाक़/४०)

तयम्मुम् का मुकम्मल तरीक़ा:

अव्वल निय्यत करो के मैं नापाकी दूर करने और नमाज़ पढ़ने के लिए तयम्मुम करता हूँ फिर दोनों हाथ मिट्टी के बड़े ढ़ेले पर मारकर उन्हें झाड़ दो, ज़्यादा मिट्टी लग जाए तो मूँह से फूँक दो और दोनों हाथों को मूँह पर इस तरह फेरो के कोई जगह बाक़ी न रह जाए, एक बाल बराबर जगह छूट जाएगी तो तयम्मुम जाइज़ न होगा, फिर दुसरी मर्तबा दोनों हाथ मिट्टी पर मारो और उन्हें झाड़ कर पहले बाएँ हाथ की चारों उँगलियाँ सीधे हाथ की उँगलियों के सिरों के नीचे रखकर खींचते हुए कुहनी तक ले जाओ, इस तरह ले जाने में सीधे हाथ के नीचे की जानिब हाथ फिर जाएगा, फिर बाएँ हाथ की हथेली सीधे हाथ के ऊपर की तरफ़ कुहनी से उँगलियों तक खींचते हुए लाओ और बाएँ हाथ के अँगूठे के अँदर की जानिब को सीधे हाथ के अँगूठे की पुश्त पर फेरो, फिर इसी तरह सीधे हाथ को बाएँ पर फ़ेरो, फिर उँगलियों का ख़िलाल करो अगर अँगूठी पहने हुए हो तो उसे उतारना या हिलाना ज़रूरी है, डाढ़ी का ख़िलाल करना भी सुन्नत है।
(तालीमुल् इस्लाम हिस्सा सुव्वम/६०)

ग़ुस्ल के फ़राइज़्:

. गुस्ल में तीन् फ़र्ज़ हैं। (१) कुल्ली करना। (२) नाक में पानी ड़ालना। (३) तमाम बदन् पर पानी बहाना। (तालीमुल् इस्लाम हिस्सा दुव्वम/२०)

ग़ुस्ल की सुन्नतें:

गुस्ल में आठ सुन्नतें हैं।(१) बिस्मिल्लाह् से इब्तिदा करना। (२) निय्यत करना (३) गट्टों तक दोनों हाथ धोना। (४) बदन् पर नजासत लगी हो तो उसे साफ़ करना। (५) वुज़ू करना। (६) पहले सर,फिर दायाँ कंधा,फिर बायाँ कंधा धोना,फिर पूरे बदन् पर पानी ड़ालना। (७) तीन् बार बदन् पर पानी ड़ालना। (८) बदन् को मल् कर नहाना। (इस्लामी अस्बाक़/३९)

ग़ुस्ल के मक्रूहात:

गुस्ल में तीन् मक्रूहात हैं।(१) पानी ज़्यादा बहाना। (२) सतर खुला होने की हालत में बात करना (३) क़िबले की तरफ़ मुँह करना। (४) सुन्नत के ख़िलाफ़ गुस्ल करना। (तालीमुल् इस्लाम हिस्सा सुव्वम/४७)

ग़ुस्ल के आदाब:

(१) ग़ुस्ल ख़ाने में पहले बायाँ पैर दाख़िल् करना। (२) हत्तल् इम्कान् सतर को छुपाना। (३) पर्दे के साथ ग़ुस्ल करना। (४) शुरू में अपने हाथों को गट्टों तक धोना। (५) शर्मगाह को धो लेना। (६) बदन् पर कोई ज़ाहिरी गंदगी हो तो पहले उस को साफ़ कर लेना। (७) ग़ुस्ल से पहले (सुनने वुज़ू की रिआयत करते हुए) वुज़ू करना।(८) क़िब्ला रूख़ हो कर ग़ुस्ल करना। (९) अगर पानी जमा हो रहा हो तो पैरों को अख़ीर में धोना। (१०) ज़्यादा पानी इस्तिअ्माल् न करना। (११) सर को बक़िया जिस्म से पहले धोना (१२) सर के बाद पहले दाहनी जानिब फिर बाएँ जानिब पानी ड़ालना। (१३) पूरे बदन् पर तीन् मर्तबा पानी बहाना। (१४) ग़ुस्ल के दर्मियान् दुआ वग़ैरह् न पढ़ना। (१५) ग़ुस्ल करते वक़्त बात चीत न करना। (१६) सलाम न करना।(१७) ग़ुस्ल ख़ाने में पेशाब वग़ैरह् न करना। (१८) पहले दाहना पैर बाहर निकालना। (सुनन् व आदाब/ ४९)

नमाज़्

शराइते नमाज़्:

शराइते नमाज़् सात हैं।(१) बदन् का पाक होना। (२) कपड़ों का पाक होना। (३) जगह् का पाक होना। (४) सतर (यानी मर्द को नाफ़ से घुटने तक और औरत को सिवाए चेहरे और हथेलियों और क़दमों के पूरे बदन्) का छुपाना। (५) नमाज़् का वक़्त होना। (६) क़िब्ले की तरफ़ मूँह करना।(७) निय्यत करना। (तालीमुल् इस्लाम हिस्सा दुव्वम/१८)

अरकाने नमाज़्:

अरकाने नमाज़् छे हैं। (१) तक्बीरे तहरीमा कहना। (२) क़ियाम (ख़ड़ा होना)। (३) क़िराअत यानी क़ुरआने मजीद पढ़ना। (४) रुकूअ् करना। (५) दोनों सजदे करना। (६) क़ायदए अख़ीरा यानी नमाज़ के अख़ीर में अत्तहिय्यात की मिक़्दार बैठना। (तालीमुल् इस्लाम हिस्सा सुव्वम/८२)

वाजिबाते नमाज़्:

नमाज़ में वाजिबात की बडी अहमियत है वजिबात के छुट्ने से नमाज़ तो नही लेकिन सज्द ए सहव वजिब होता है और सज्द ए सहव भी न किया तो नमाज़ का इआदा (यानी लौटाना) वाजिब हो जाता है। अगर नमाज़ का इआदा न करे तो फासिक़ और गुनहगार होगा।

वाजिबाते नमाज़् चौदह् हैं।

(१) फ़र्ज़ की पहली दो रकअतों को क़िराअत के लिए मुक़र्रर करना। (२) फ़र्ज़ नमाज़ों की पहली दो रकअतों में और सुन्नत,नफल और वित्र की तमाम रकअतों में सूरए फ़ातिहा पढ़ना। (३) फ़र्ज़ नमाज़ों की पहली दो रकअतों में और वाजिब,सुन्नत,और नफल नमाज़ों की तमाम रकअतों में सूरए फ़ातिहा के बाद कोई सूरत बड़ी एक आयत या छोटी तीन् आयतें पढ़ना। (४) सूरए फ़ातिहा को सूरत से पहले पढ़ना। (५) क़िराअत् ,रुकूअ् ,सजदों और रकअतों में तर्तीब क़ायम रखना। (६) क़ौमा करना। (यानी रुकूअ् से उठकर सीधा खड़ा होना) (७) जल्सह् (यानी दोनों सजदों के दर्मियान् में सीधा बैठ जाना)। (८) तअ्दीले अरकान् (यानी रुकूअ् ,सजदे, वग़ैरह् को इत्मिनान् से अच्छी तरह् अदा करना)। (९) क़ायदए ऊला (यानी तीन् और चार रकअत वाली नमाज़् में दो रकअतों के बाद तशह्हुद की मिक़्दार बैठना)। (१०) दोनों क़ायदों में तशह्हुद पढ़ना। (११) इमाम को नमाज़े फ़जर,मग़्रिब,इशा, जुमआ, ईदैन्, तरावीह्, और रमज़ान् शरीफ़ की वित्रों में आवाज़् से क़िराअत् करना और ज़ुहर, असर,वग़ैरह् नमाज़ों में आहिस्ता क़िराअत् करना।(१२) लफ्ज़े सलाम के साथ नमाज़् से अलाहिदा होना। (१३) नमाज़े वित्र में कुनूत के लिए तक्बीर कहना और दुआए कुनूत पढ़ना। (१४) दोनों ईदों की नमाज़् में ज़ाईद तकबीरें कहना (तालीमुल् इस्लाम हिस्सा सुव्वम /९०)

सुवाल: सज्द ए सहव किसे कहते हैं?।

जवाब: सहव का मतलब् भूल जाना, भूले से कभी कभी नमाज़ में कमी ज्यादती होकर नुक़्सान आजाता है,बाज़् नुक़सान ऐसे होते हैं के उन को दूर करने के लिए नमाज़ के आख़री क़ायदे में दो सज्दे किए जाते हैं उन को सज्द ए सहव कहते हैं।

सुवाल: सजद ए सहव किन चीज़ों से वाजिब होता है?।

जवाब: किसी वाजिब के छूट जाने से या वाजिब में ताख़ीर हो जाने से या

किसी फ़र्ज़ में ताख़ीर हो जाने से या किसी फ़र्ज़ को मुक़द्दम (पहले) कर देने से या किसी फ़र्ज़ को मुकर्रर (डबल) कर देने से मसलन दो रुकूअ् कर लिए या किसी वाजिब की कैफ़ियत बदल देने से सजदए सह्व वाजिब होता है।

सुवाल: ये बातें जिन को भूल कर करने से सजदए सह्व वाजिब होता है

अगर क़सदन (जान बूझ कर)की जाएँ तो क्या हुक्म है ?।

जवाब: क़सदन (जान बूझ कर) करने से सजदए सह्व से नुक़सान की भरपाई नहीं होती; बलकी नमाज़ को लौटाना वाजिब होता है। (तालीमुल् इस्लाम हिस्सा चहारुम /६६ से ६८)

मुफ़्सिदाते नमाज़् :

मुफ्सिदाते नमाज़ उन चीज़ों को कहते हैं जिन से नमाज़ फासिद् होजाती है यानी टुट जाती है और उसे लौटाना ज़रूरी होता है ।

मुफ़्सिदाते नमाज़् अठारह् हैं । (१) नमाज़् में बात करना जान बूझकर या भूल् कर, थोड़ा हो या बहुत, हर सूरत में नमाज़् टूट जाती है । (२) सलाम करना यानी किसी को सलाम करने के इरादे से सलाम या तस्लीम या अस्सलामु अलैकुम् या इसी जैसा कोई लफ्ज़् कह् देना। (३) सलाम का जवाब देना या छींकने वाले को यरहमुकल्लाह् कहना या नमाज़् से बाहर वाले किसी शख़्स की दुआ पर आमीन् कहना । (४) किसी बूरी ख़बर पर इन्ना लिल्लाही व इन्ना इलैही राजिऊन् पढ़ना या किसी अच्छी ख़बर पर अल् हम्दु लिल्लाह् या किसी अजीब ख़बर पर सुब्हानल्लाह् कहना। (५) दर्द या रंज की वजह् से आह् या ऊह् या उफ़् करना। (६) अपने इमाम के सिवा किसी दुसरे को लुक़्मा देना यानी क़िराअत् बताना। (७) कुरआने शरीफ़ देख कर पढ़ना। (८) कुरआने शरीफ़ पढ़ने में सख़्त ग़लती करना। (९) अमले कसीर यानी कोई ऐसा काम करना के देखने वाले ये समझें के ये शख़्स नमाज़् नहीं पढ़ रहा है। (१०) खाना,पीना जान् बूझकर हो या भूले से। (११) दो सफ़ों की मिक़दार चलना। (१२) क़िबले की तरफ़ से बिला उज्र सीना फेर लेना। (१३) नापाक जगह् पर सजदा करना। (१४) सतर खुल् जाने की हालत में एक रुक्न की मिक़दार ठेहरना। (१५) ऐसी चीज़् की दुआ माँगना जो आदमियों से माँगी जाती है; मसलन्: या अल्लाह आज मुझे सौ रुपये दे दे। (१६) दर्द या मुसीबत की वजह् से इस तरह् रोना के आवाज़् में हुरुफ़ ज़ाहिर हों। (१७) बालिग़ आदमी का नमाज़् में क़ह्क़हा मारकर या आवाज़् से हँसना। (१८) इमाम से आगे बढ़ जाना। (तालीमुल् इस्लाम हिस्सा चहारुम /४७)

मक्रुहाते नमाज़् :

मक्रुहाते नमाज़् उनतीस हैं । (१) सद्ल यानी कपड़े को लटकाना,मसलन् : चादर सर पर ड़ालकर उस के दोनों किनारे लटका देना या अचकन् या चोग़ा बग़ैर उस के आस्तीनों में हाथ ड़ाले कंधों पर ड़ाल देना। (२) कपड़ों को मिट्टी से बचाने के लिए हाथ से रोकना या समेटना। (३) अपने कपड़ों या बदन् से खेलना। (४) मामूली कपड़ों में जिन्हें पहन् कर मजमे मे जाना पसंद नहीं किया जाता नमाज़् पढ़ना। (५) मुँह में रुपया या पैसा या और कोई ऐसी चीज़् रख कर नमाज़् पढ़ना जिस की वजह् से क़िराअत करने से मजबूर न रहे और अगर क़िराअत से मजबूरी हो जाए तो बिल्कुल् नमाज़् न होगी। (६) सुस्ती और बे परवाई की वजह् से नंगे सर नमाज़् पढ़ना। (७) पाख़ाना या पेशाब की हाजत होने की हालत में नमाज़् पढ़ना। (८) बालों को सर पर जमा कर के चोटी बांधना। (९) कंकरियों को हटाना; लेकिन अगर सजदा करना मुश्किल हो तो एक मर्तबा हटाने में मुज़ाइक़ा नहीं। (१०) उँगलियाँ चटख़ाना या एक हाथ की उँगलियाँ दुसरे हाथ की उँगलियों में ड़ालना। (११) कमर या कूख़ या कुल्हे पर हाथ रखना। (१२) क़िबले की तरफ़ से मुँह फेर कर या सिर्फ़ निगाह् से इधर उधर देखना। (१३) कुत्ते की तरह् बैठना यानी रानें खड़ी कर के बैठना और रानों को पेट से और घुटनों को सीने से मिला लेना और हाथों को ज़मीन् पर रख लेना। (१४) सजदे में दोनों कलाइयों को ज़मीन् पर बिछा लेना मर्द के लिए मक्रूह् है।(१५) किसी आदमी की तरफ़ नमाज़् पढ़ना जो नमाज़ी की तरफ़ मुँह किए बैठा हो। (१६) हाथ या सर के इशारे से सलाम का जवाब देना। (१७) बिला उज्र चार ज़ानू (आलती पालती मारकर) बैठना। (१८) क़सदन् जमाई लेना या रोक सकने की हालत में न रोकना। (१९) आँखों को बंद करना; लेकिन अगर नमाज़् में दिल लगने के लिए बंद करे तो मक्रूह् नहीं। (२०) इमाम का मेहराब के अँदर खड़ा होना; लेकिन क़दम अगर मेहराब से बाहर हों तो मक्रूह् नहीं। (२१) अकेले इमाम का एक हाथ उँची जगह् पर खड़ा होना और अगर उस के साथ कुछ मुक़्तदी भी हों तो मक्रूह् नहीं। (२२) ऐसी सफ़ के पीछे अकेले खड़े होना जिस में जगह् ख़ाली हो। (२३) किसी जानदार की तसवीर वाले कपड़े पहन कर नमाज़् पढ़ना। (२४) ऐसी जगह् नमाज़् पढ़ना के नमाज़ी के सर के ऊपर या उस के सामने या दाँए बाएँ तरफ़ या सजदे की जगह् तस्वीर हो। (२५) आयतें या सूरतें या तसबीहें उँगलियों पर शुमार करना। (२६) चादर या कोई और कपड़ा इस तरह् लपेट कर नमाज़् पढ़ना के जल्दी से हाथ न निकल सकें। (२७) नमाज़् में अँगड़ाई लेना या सुस्ती उतारना।

(२८) अमामा के पेच पर सजदा करना। (२९) सुन्नत के ख़िलाफ़ नमाज़् में कोई काम करना। (तालीमुल् इस्लाम हिस्सा चहारुम /४९)

सुन्नत की अहमियत :

फ़राइज़ के फ़ौत होने(छूट जाने) से नमाज़ फ़ासिद हो जाती है और वाजिबात के फ़ौत होने से सजदए सहव वाजिब होता है। सुन्नत का छोड़ना न नमाज़ फ़ासिद होने का बाइस (वजह्)है न सजदए सहव वाजिब होने का; लेकिन अगर कोई सुस्ती से छोड़ दे बाइसे मज़म्मत (बुरा) है और छोड़ने का मामूल बनाले तो गुनाह् और अगर हलका समझ कर छोड़ दे, और सुन्नतों को अहम ही न समझे तो बाइसे कुफ़्र है; अलबत्ता सहवन् (भूलकर) सुन्नत छूट गई तो कोई मुज़ाइक़ा (हर्ज) नहीं। (क़ामूसुल फिक़्ह:४/२४८)

नमाज़् की मुकम्मल सुन्नतें :

क़ियाम की सुन्नतें :

क़ियाम में ग्यारह् सुन्नतें हैं। (१) तक्बीरे तहरीमा कहते वक़्त सीधा खड़े होना, यानी सर को पस्त न करना। (२) पैरों की उँगलियाँ क़िबले की तरफ़ रखना। (३) तक्बीरे तहरीमा के वक़्त दोनों हाथों को कानों तक उठाना। (४) हथेलियों को क़िबले की तरफ़ रखना। (५) उँगलियों को अपनी हालत पर रखना, यानी न ज़्यादा खुली हों और न पूरी तरह् बंद । (६) मुक़्तदी की तक्बीरे तहरीमा का इमाम की तक्बीरे तहरीमा के साथ होना। (७) दाहने हाथ की हथेली बाएँ हाथ की पुश्त पर रखना। (८) छुंगलियाँ और अँगूठे से हल्क़ा बना कर गट्टे को पकड़ना। (९) दर्मियानी तीन उँगलियों को कलाई पर रखना। (१०) नाफ़ के नीचे हाथ बाँधना। (११) सना पढ़ना। (सुनन व आदाब /१२९)

क़िराअत की सुन्नतें :

क़िराअत में सात सुन्नतें हैं। (१) तअव्वुज़् यानी अऊज़ु बिल्लाह् पढ़ना। (२) तस्मिया यानी बिस्मिल्लाह् पढ़ना। (३) न ज़्यादा जल्दी पढ़ना और न ज़्यादा ठेहर कर; बल्की दर्मियानी रफतार से पढ़ना। (४) आहिस्ता से आमीन कहना। (५) फ़जर और ज़ुहर में तिवाले मुफ़स्सल् (यानी सुरए हुजरात से सुरए बुरूज तक) असर और इशा में औसाते मुफ़स्सल् (यानी सूरए बुरूज से सूरए बय्यिनाह् तक) और मग़रिब में क़िसारे मुफ़स्सल् (यानी सूरए बय्यिनाह् से सूरए नास तक) में से सूरतें पढ़ना। (६) फ़र्ज़ की तीसरी और चौथी रकअत में सिर्फ सूरए फ़ातिहा पढ़ना। (७) फ़जर की पहली रकअत को तवील् करना। (सुनन् व

आदाब /१३०)

रुकूअ् की सुन्नतें :

रुकूअ् में आठ सुन्नतें हैं। (१) रुकूअ् की तक्बीर कहना। (२) रुकूअ् में दोनों हाथों से घुटनों को पकड़ना। (३) घुटनों को पकड़ने में उँगलियों को कुशादह् रखना। (४) पिंड़लियों को सीधा रखना। (५) पीठ को बिछा देना। (६) सर और सुरीन् को बराबर रखना। (७) रुकूअ् में कम से कम तीन् बार सुबहान रब्बियल् अज़ीम पढ़ना। (८) रुकूअ् से उठते वक़्त इमाम को समिअल्लाहु लिमन् हमिदह्,मुक़्तदी को रब्बना लकल् हम्द और मुन्फ़रिद् को दोनों कहना। (सुनन व आदाब /१३०)

सजदे की सुन्नतें :

सजदे में बाराह् सुन्नतें हैं: (१) सजदे की तक्बीर कहना। (२) सजदे में पहले दोनों घुटने रखना। (३) फिर दोनों हाथ रखना। (४) फिर नाक रखना। (५) फिर पेशानी रखना। (६) दोनों हाथों के दर्मियान सजदा करना। (७) सजदे में पेट को रानों से अलग रखना। (८) पहलुवों को बाज़ुवों से अलग रखना। (९) कुहनियों को ज़मीन् से अलग रखना। (१०) सजदे में कम अज़् कम तीन् बार सुबहान रब्बियल् अअ्ला पढ़ना। (११) सजदे से उठने की तक्बीर कहना। (१२) सजदे से उठने में पहले पेशानी,फिर नाक,फिर हाथों को फिर घुटनों को उठाना,और दोनों सजदों के दर्मियान् इत्मिनान् से बैठना। (सुनन् व आदाब/१३१)

क़ायदे की सुन्नतें :

. **कायदे में तेराह् सुन्नतें हैं।** (१) दाँए पैर को खड़ा रखना और बाएँ पैर को बिछा कर उस पर बैठना,और पैरों की उँगलियों को क़िबले की तरफ़ रखना। (२) दोनों हाथों को रानों पर रखना। (३) तशह्हुद में अशहदु अल्ला इलाह् पर शहादत की उँगली को उठाना,और इल्लल्लाह् पर झुका देना। (४) क़ायदए अख़ीरा में दुरूद शरीफ़ पढ़ना। (५) दुरूद शरीफ़ के बाद दुआए मासूरा पढ़ना। (६) दोनों तरफ़ सलाम फेरना। (७) पहले दाहनी तरफ़ सलाम फेरना। (८) इमाम का मुक़्तदियों,फ़रिश्तों और स्वालेह् जिन्नात की निय्यत करना। (९) मुक़्तदी का इमाम,फ़रिश्तों, स्वालेह् जिन्नात, दाँए बाएँ मुक़्तदियों की निय्यत करना। (१०) मुन्फ़रिद् को सिर्फ़ फ़रिश्तों की निय्यत करना। (११) मुक़्तदी का इमाम के साथ साथ सलाम फेरना। (१२) दुसरे सलाम की आवाज़् को पहले सलाम की आवाज़् से पस्त करना। (१३) मस्बूक़ को इमाम के

सलाम से फ़ारिग़ होने तक इंतिज़ार करना। (सुनन् व आदाब /१३२)

नमाज़े जुमआ:

जुमआ की नमाज़ आज़ाद, बालिग़ समझदार, तंदरुस्त, मुक़ीम, मर्दों पर फ़र्ज़ है, ना बालिग़ बच्चों, ग़ुलामों, दीवानों और बीमारों, अंधों, अपाहिजों, और इसी तरह् के उज्र वालों और मुसाफ़िरों और औरतों पर जुमआ की नमाज़ फ़र्ज़ नहीं। (तालीमुल् इस्लाम हिस्सा चहारुम /८०)

नमाज़े जुमआ के सही होने की शर्तें:

पहली शर्त: शहर या शहर के क़ायम मक़ाम बडे गांव या क़स्बे में होना,इसी तरह् शहर के आस पास ऐसी आबादी के शहर की ज़रुरतें उस के साथ मुतअल्लिक़ हों मसलनः शहर के मुर्दे वहाँ दफ़्न होते हों या छावनी हो तो वो भी शहर के हुक्म में है, छोटे गांव में जुमआ दुरुस्त नहीं।

दुसरी शर्त: जुहर का वक़्त होना। वक़्ते ज़ुहर से पहले और उस के बाद जुमआ दुरुस्त नहीं।

तीसरी शर्त: नमाज़ से पहले ख़ुतबा पढ़ना। अगर नमाज़ के बाद ख़ुतबा पढ़ा जाए तो नमाज़ नहीं होगी।

चौथी शर्त: जमात का होना। यानी इमाम के सिवा कम से कम तीन आदमियों का शुरू ख़ुतबे से नमाज़ ख़तम होने तक मौजूद रहना।

पांचवीं शर्त: इज़ने आम । (तालीमुल् इस्लाम हिस्सा चहारुम/८१)

(यानी आम इजाज़त के साथ अलल् ऐलान नमाज़े जुमआ पढ़ना,किसी ख़ास मक़ाम में छुप कर नमाज़े जुमआ पढ़ना दुरुस्त नहीं,अगर किसी ऐसे मक़ाम पर नमाज़े जुमआ पढ़ी जाए जहाँ आम लोगों को आने की इजाज़त न हो या जामा मस्जिद के दरवाज़े बंद कर लिए जाएँ तो नमाज़ न होगी। (इल्मुल् फ़िक़ह् २९७) ये पाँचों शर्तें पाई जाएँ जब जुमआ की नमाज़ सही होगी।

तरावीह्:

नमाज़े तरावीह् मर्दों और औरतों दोनों के लिए सुन्नते मुअक्कदह् है और जमात से पढ़ना सुन्नते किफ़ाया है यानी अगर मुहल्ले की मस्जिद में नमाज़े तरावीह् जमात से पढ़ी जाए और कोई शख़्स घर में अकेला पढ़ ले तो गुनह्गार न होगा; लेकिन अगर तमाम मुहल्ले वाले जमात से न पढ़ें तो सब गुनह्गार होंगे। (तालीमुल् इस्लाम हिस्सा चहारुम/३९)

तरावीह् की बीस रकअतें दस सलामों के साथ मस्नून हैं,यानी दो दो

रकअतों की निय्यत करे और हर तरवीहा (चार रकअतों) के बाद थोड़ी देर आराम कर लेना मुस्तहब् है। (तालीमुल् इस्लाम हिस्सा चहारुम/४०)

नमाज़े तरावीह् में चार रकअत के बाद इतनी देर तक बैठना जितनी देर में चार रकअतें पढ़ी गई हैं मुस्तहब है,हाँ अगर इतनी देर बैठने में लोगों को तकलीफ़ हो और जमात के कम हो जाने का ख़ौफ़ हो तो इस से कम बैठे इस बैठने की हालत में (आदमी) को इख़्तियार है चाहे नवाफ़िल पढ़े,चाहे तस्बीह पढ़े या चुप चाप बैठा रहे। (इल्मुल फिकह:१९५)

नमाज़े ईदैन:

दोनों इदों की नमाज़ें वाजिब हैं और जिन लोगों पर जुमआ की नमाज़ फ़र्ज़ है उन्हीं पर ईद की नमाज़ वाजिब है और जो शर्तें जुमआ की हैं वही ईद की नमाज़ की हैं । मगर ईदैन की नमाज़ का वक़्त ज़वाल से पहले ख़तम हो जाता है और ईद का ख़ुतबा न तो फ़र्ज़ है और न नमाज़ से पहले बल्के के बाद ख़ुतबा पढना सुन्नत है। (तालीमुल् इस्लाम हिस्सा चहारुम/८४)

नमाज़े ईदैन का तरीक़ा:

दोनों ईदों की नमाज़ दो रकअत है इन दोनों नमाज़ों के लिए अज़ान और तकबीर नहीं,पहले निय्यत इस तरह करें के मैं ईदुल् फ़ित्र या ईदुल् अज़हा की वाजिब नमाज़ छे ज़ाइद तकबीरों के साथ इस इमाम के पीछे पढ़ता हूँ, फिर तकबीरे तहरीमा कहकर हाथ बांध लें और सना पढ़ें,फ़िर दोनों हाथ कानों तक उठाते हुए अल्लाहु अकबर कहें और हाथ छोड़ दें,फिर दुसरी बार दोनों हाथ कानों तक उठा कर अल्लाहु अकबर कह कर दोनों हाथ छोड़ दें फिर तीसरी बार दोनों हाथ कानों तक उठा कर अल्लाहु अकबर कहें और हाथ बांध लें,फिर इमाम अऊज़ु बिल्लाह, बिस्मिल्लाह, सुरए फ़ातिहा, सूरत पढ़ कर रुकूअ् सजदा करे, दुसरी रकअत के लिए जब खड़े हों तो इमाम पहले क़िराअत करे, क़िराअत से फ़ारिग़ हो कर कानों तक हाथ उठा कर तकबीर कहें और हाथ छोड़ दें फिर कानों तक हाथ उठा कर दुसरी तकबीर कहें और हाथ छोड़ दें,फिर कानों तक हाथ उठा कर तीसरी तकबीर कहें और छोड़ दें,फिर बग़ैर हाथ उठाए चौथी तकबीर कह कर रुकूअ् में जाएँ और क़ायदे के मुवाफ़िक़ नमाज़ पूरी करें। (तालीमुल् इस्लाम् हिस्स चहारुम /८५)

नमाज़े जनाज़ा के फ़राईज़् :

(१) चार मर्तबा अल्लाहु अकबर कहना। (२) क़ियाम यानी खड़ा होना। (इल्मुल् फ़िक़ह्: ३४७)

नमाज़े जनाज़ा के शराईत :

नमाज़े जनाज़ा के सही होने के लिए दो क़िस्म की शर्ते हैं एक क़िस्म की वो शर्तें जो नमाज़् पढ़ने वालों में पाई जानी ज़रूरी हैं, वो वही हैं जो और नमाज़ों के लिए हैं यानी बदन का पाक होना,सतरे औरत, क़िबले की तरफ़ मुँह करना,निय्यत करना वग़ैरह्। दुसरी क़िस्म की वो शर्तें जिन का मय्यित से तअल्लुक़ है वो छे हैं।

(१) मय्यित का मुसल्मान होना। (२) मय्यित का पाक होना। (३) उस के कफ़न् का पाक होना। (४) सतर का ढका हुवा होना। (५) मय्यित का नमाज़् पढ़ने वाले के सामने रख्खा हुवा होना। (तालीमुल् इस्लाम हिस्सा चहारुम /८८) (६) मय्यित का या जिस चीज़् पर मय्यित हो उस का ज़मीन पर रख्खा हुवा होना। (अहकामे मय्यित:५६)

नमाज़े जनाज़ा की सुन्नतें:

नमाज़े जनाज़ा में तीन चीज़ें मस्नून हैं: (१) अल्लाह तआला की हम्द करना (२) नबी (स्व.) पर दुरूद पढना (३) मय्यित के लिये दुआ करना । (इल्मुल् फ़िक़ह्: ३४७)

नमाज़े जनाज़ा का मुकम्मल तरीक़ा:

अव्वल नमाज़ के लिए सफ़ बांध कर खड़े हो, अगर आदमी ज़्यादा हों तो तीन या पाँच या सात सफ़ें बनाना बेहतर है, जब सफ़े दुरुस्त हो जाएँ तो नमाज़े जनाज़ा की निय्यत इस तरह करो के मैं ख़ुदा के वास्ते इस जनाज़े की नमाज़ इस मय्यित की दुआए मग्फ़िरत के लिए इस इमाम के पीछे पढ़ता हूँ, फिर इमाम ज़ोर से और मुक़्तदी आहिस्ता से तकबीर कहें और दोनों हाथ कानों तक उठा कर नाफ़ के नीचे बांध लें, इमाम और मुक़्तदी सब आहिस्ता आहिस्ता सना पढ़ें सना में व तआला जद्दुक के बाद जल्ल सनाउक भी पढ़ लें तो बेहतर है, फिर इमाम ज़ोर से और मुक़्तदी आहिस्ता बग़ैर हाथ उठाए दुसरी तकबीर कहें और दोनों दुरूद जो नमाज़ के क़ायदए अख़ीरा में पढ़े जाते हैं इमाम और मुक़्तदी सब आहिस्ता आहिस्ता पढ़ें, फिर दुसरी तकबीर की तरह तीसरी तकबीर कहें और अगर जनाज़ा बालिग़ मर्द या औरत का हो तो इमाम और मुक़्तदी आहिस्ता आहिस्ता ये दुआ पढ़ें।

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِحَيِّنَا وَمَيِّتِنَا، وَشَاهِدِنَا وَغَائِبِنَا، وَصَغِيْرِنَا وَ
كَبِيْرِنَا، وَذَكَرِنَا وَأُنْثَانَا، اَللّٰهُمَّ مَنْ أَحْيَيْتَهُ مِنَّا، فَأَحْيِهِ عَلَى

الْإِسْلَامِ، وَمَنْ تَوَفَّيْتَهُ مِنَّا، فَتَوَفَّهُ عَلَى الْإِيْمَانِ

और अगर जनाज़ा ना बालिग़ लड़के का हो तो ये दुआ पढ़ें :

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ لَنَافَرَطًا وَّاجْعَلْهُ لَنَا أَجْرًا وَّ ذُخْرًا وَّاجْعَلْهُ لَنَا شَافِعًا وَّمُشَفَّعًا

और अगर जनाज़ा ना बालिग़ह् लड़की का हो तो ये दुआ पढ़ें :

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهَالَنَا فَرَطاً وَّاجْعَلْهَا لَنَا أَجْرًا وَّ ذُخْرًا وَاجْعَلْهَا لَنَا شَافِعَةً وَّمُشَفَّعَةً

(तालीमुल् इस्लाम् ४/८९)

उस के बाद इमाम ज़ोर से और मुक़्तदी आहिस्ता चौथी तकबीर कहें और फिर इमाम ज़ोर से और मुक़्तदी आहिस्ता से पहले दाएँ तरफ़ फिर बाएँ तरफ़ सलाम फेरें। (तालीमुल् इस्लाम् हिस्सा चहारुम /८९-९१)

नमाज़े कुसूफ़ (सूरज ग्रहन):

कुसूफ़ के वक़्त दो रकअत नमाज़ मसनून है,नबीए करीम स्व. ने फ़र्माया: के कुसूफ़ और ख़ुसूफ़ अल्लाह की कुदरत की निशानियाँ हैं,इस से मक़सूद बंदों को ख़ौफ़ दिलाना है,पस जब तुम उसे देखो तो नमाज़ पढ़ो।

नमाज़े कुसूफ़ में अज़ान और इक़ामत नहीं; बलकी अगर लोगों को जमा करना मक़सूद हो तो पुकार दिया जाए (ऐलान कर दिया जाए)। (इल्मुल् फ़िक़्हः १९८)

नमाज़े कुसूफ़ में बड़ी बड़ी सूरतों का मिस्ल सूरए बक़रा वग़ैरा का पढ़ना और रुकूअ व सजदा का बहुत देर तक अदा करना मसनून है।

नमाज़ के बाद इमाम को चाहिए के दुआ में मसरूफ़ हो जाए और सब मुक़्तदी आमीन कहें,जब तक ग्रहन मौक़ूफ़ न हो जाए; हाँ अगर ऐसी हालत में आफ़ताब ग़ुरूब हो जाए या किसी नमाज़ का वक़्त आ जाए तो अलबत्ता दुआ को मौक़ूफ़ कर के नमाज़ में मशग़ूल हो जाना चाहिए। (इल्मुल् फ़िक़्हः १९८)

नमाज़े ख़ुसूफ़ (चाँद ग्रहन):

ख़ुसूफ़ के वक़्त भी दो रकअत नमाज़ मसनून है; मगर इस में दुआ मसनून नहीं। (इल्मुल् फ़िक़्हः १९९)

नमाज़े इस्तिस्क़ा (बारिश तलब करने के लिए)

रसूलुल्लाह स्व. मुसीबत व मुश्किलात के मोक़े पर दुआ और नमाज़ का इहतिमाम फ़र्माया करते थे और क़हत साली, ख़ुश्क साली,पानी का ख़तम हो जाना भी आफ़ात ही में से है; चुनाँचे ऐसे मोक़े पर आप स्व. ने नमाज़ इस्तिस्क़ा का इहतिमाम फ़र्माया,नमाज़े इस्तिस्क़ा की कुल दो रकअतें हैं,जो जमात के साथ अदा की जाएँगी और इन में क़िराअत जहरी होगी।

बेहतर ये है पहली रकअत में सुरए आला (سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْأَعْلٰى) और दुसरी रकअत में सूरए ग़ाशिया (هل اتاكَ حَدِيْثُ الْغَاشِيَةِ) पढ़े,फिर उस के बाद ख़ुतबा है जो बग़ैर मेंबर के ज़मीन पर खड़े हो कर दिया जाएगा।

फिर हाथ उठा कर दुआ की जाएगी, इमाम ख़ुतबा देते हुए लोगों की तरफ़ मुतवज्जह रहे और दुआ करते वक़्त क़िबला रुख, नीज़ ख़ुतबे में असा इस्तिअमाल करे। (किताबुल् फ़तावा :२/३७५ ज़मज़म पब्लिशर्ज़)

इस्तिस्क़ा से मुतअल्लिक़ ज़रूरी अहकाम:

अल्लाह तआला का इर्शाद है के ‘‘सब्र और नमाज़ के ज़रीए अल्लाह से मदद चाहो’’ गोया नमाज़ अल्लाह से मदद हासिल करने की कलीद (चाबी) है, चुनाँचे मुख़्तलिफ़ ज़रूरतों के मोक़े पर मख़सूस नमाज़ें और किसी भी ज़रूरत के लिए नमाज़े हाजत रख़्खी गई है, इन्सान की एक बड़ी ज़रूरत पानी है,अगर लोग क़हत से दोचार हो जाएँ तो उस के मोक़े के लिए ये मख़सूस नमाज़ ‘‘इस्तिस्क़ा’’ रख़्खी गई है। इस्तिस्क़ा से मुतअल्लिक़ ज़रूरी अहकाम इस तरह हैं:

(१) जब नहरें और कुँवे ख़ुश्क हो जाएँ, इन्सान व हैवान की पीने की ज़रूरत नीज़ काश्त (खेती) की ज़रूरत के लिए पानी मयस्सर न हो या पानी की ना काफ़ी मिक़्दार हो तो ऐसी सूरत में इस्तिस्क़ा मस्नून है।

(२) नमाज़े इस्तिस्क़ा के अस्ल माना पानी तलब करने के हैं इस लिए पानी के लिए की जाने वाली दुआ और नमाज़ दोनों को इस्तिस्क़ा कहते हैं, रसूलुल्ला स्व. से जुमआ के दिन ख़ुतबे में बारिश की दुआ पर इक्तिफ़ा करना भी साबित है और दो रकअत नमाज़े इस्तिस्क़ा पढ़ना भी; इसी लिए इमाम अबू हनीफ़ा के नज़दीक दोनों बातों की गुंजाइश है, ये भी के दुआ पर इक्तिफ़ा किया जाए और ये भी के बा ज़ाब्ता नमाज़ अदा की जाए; अलबत्ता चूँके कुरआने मजीद में नमाज़ को अल्लाह तआला से मदद की कलीद क़रार दिया है,इस लिए नमाज़ पढ़ना बेहतर है।

(३) मुस्तहब तरीक़ा ये है के नमाज़े इस्तिस्क़ा पढ़ने से पहले तीन दिन रोज़ा रख़्खा जाए, गुनाहों से तौबा की जाए और किसी के साथ ज़ुल्म व ज़्यादती हो रही हो तो उस की तलाफ़ी की जाए।

(४) फिर चौथे दिन नमाज़ के लिए निकले, पैदल जाना बेहतर है, पुराने धुले हुए कपड़े हों, अगर पैवंद वाले कपड़े हों तो वो पहन लिए जाएँ, चलते हुए सर झुकाए रहें, आजिज़ी की कैफ़ियत एक एक अदा से नुमायाँ हो, तौबा व इस्ग़िफ़ार करते रहें, और बेहतर है के निकलने से पहले कुछ सदक़ा भी कर लें।

(५) इस्तिस्क़ा में बूढ़ों, बच्चों, यहाँ तक के जानवरों को भी साथ ले जाना मुस्तहब है; गोया ये अल्लाह तआला से रहम की अपील है के इन कमज़ोरों के तुफ़ेल हम सब को पानी से नवाज़ा जाए,इस लिए के रसूलुल्लाह स्व. ने फ़र्माया: तुम लोगों को तुम्हारे कमज़ोरों ही की वजह से रिज़्क़ दिया जाता है और तुम्हारी मदद की जाती है।

(६) नमाज़े इस्तिस्क़ा मक्का, मदीना, बैतुलमुक़द्दस में तो मस्जिदे हराम, मस्जिदे नबवी और मस्जिदे अक्सा में पढी जाएगी; लेकिन दुसरे मक़ामात पर बेहतर है बाहर निकलकर सहरा (जंगल) में अदा की जाए।

(७) नमाज़े इस्तिस्क़ा इन्फिरादन यानी तन्हा तन्हा भी पढ़ी जा सकती है, इमाम अबू हनीफ़ा के नज़दीक नमाज़े इस्तिस्क़ा के लिए जमात ज़रूरी नहीं; लेकिन जमात के साथ पढ़ना बेहतर है; क्यों के रसूलुल्लाह स्व. ने जमात के साथ ये नमाज़ अदा फ़र्माई है और जिस अमल में जमात साबित हो उस को इज्तिमाई तौर पर करना बेहतर है; क्यों के इस में अल्लाह तआला की मदद शामिले हाल होती है।

(८) नमाज़ की कैफ़ियत ये होगी के इमाम दो रकअत नमाज़ पढ़ाएगा; क्यों के रसूलुल्लाह स्व. ने सहाबा रजि. को दो रकअत नमाज़ पढ़ाई है ।

(९) बेहतर है के नमाज़ में पहली रकअत में सूरए आला और दुसरी रकअत में सूरए ग़ाशिया पढ़ी जाए; क्यों के रसूलुल्लाह स्व. से इस्तिस्क़ा में इन सूरतों का पढ़ना साबित है, क़िराअत जहर(ज़ोर) के साथ की जाए; क्यों के रसूलुल्लाह स्व. के बारे में मन्क़ूल है के आप स्व. ने नमाज़े ईद की तरह नमाज़े इस्तिस्क़ा पढ़ाई। और नमाज़े ईद में क़िराअत ज़ोर से की जाती है।

(१०) नमाज़ के बाद इमाम ख़ुतबा देगा, ये ख़ुतबा इमाम अबू युसुफ और इमाम मुहम्मद के नज़दीक मस्नून है जैसा के नमाज़े ईद के बाद ख़ुतबा दिया जाता है । ये ख़ुतबा ज़मीन ही पर खड़े हो कर दिया जायेगा।

(११) ख़ुतबे के बाद इमाम क़िबला रूख़ होकर दुआ करेगा, दुआ ज़ोर से भी की जा सकती है, और आहिस्ता भी, दुसरे लोग इमाम के पीछे क़िबला रूख़ होकर बैठेंगे और दुआ करेंगे। अगर इमाम दुआ बुलंद आवाज़ से कर रहा हो तो लोग उस पर आमीन कहते जाएँगे।

(१२) आम दुआवों में हाथ सीने तक उठाया जाएगा; लेकिन नमाज़े इस्तिस्क़ा में हाथ सर तक उठाना मस्नून है। हदीस में है के रसूलुल्लाह स्व. ने हाथ इतना बुलंद फ़र्माया के बग़ल मुबारक की सुफेदी नज़र आती थी; अलबत्ता हाथ को सर की मिक़्दार से ऊँचा नहीं होना चाहिए,के रसूलुल्लाह स्व.से इसी तरह दुआ करना मन्क़ूल है। ख़ास तौर पर इस्तिस्क़ा की नमाज़ में हाथ इस तरह उठाया जाएगा के पुश्त ऊपर की तरफ़ हो और हथेली ज़मीन की तरफ़ । के हज़रत अनस रजि. ने हुज़ूर स्व. का यही अमल नक़ल किया है, बाज दुसरी रिवायात में भी ये बात मन्कूल है।

(१३) रसुलुल्लाह स्व.ने नेक फ़ाली की तौर पर चादर को पलट दिया था, इसी लिए इमाम मुहम्मद की राय है के ख़ुतबे का कुछ हिस्सा पढ़ने के बाद चादर पलट दी जाए, बाज़ रिवायात से मालूम होता है के रसूलुल्लाह स्व.ने नमाज़ से पहले चादर पलट दी थी और बाज़ रिवायात में है के दुआ से पहले आप स्व. ने ये अमल किया था, इस लिए ख़ुतबे के बाद दुआ से पहले या नमाज़ से पहले इस अमल को करना चाहिए, उस का मक़सद नेक फ़ाली है के : ऐ अल्लाह जैसे हमारी इस हालत में तग़य्युर हुवा है वैसी ही मौसम में भी तग़य्युर फ़र्मा दिजीए।

चादर को पलटने की दो सूरतें हो सकती हैं, पहले ओढ़ते हुए जो हिस्सा ऊपर था अब उसे नीचे कर दिया जाए, या जो हिस्सा दाँए था बाएँ कर दिया जाए, या अँदर के हिस्से को बाहर या बाहर के हिस्से को अँदर कर दिया जाए।

(१४) दुआ में ख़ूब इल्हा (रोने) की कैफ़ियत होनी चाहिए, रसूलुल्लाह स्व. से दुआ के मुख़्तलिफ़ अल्फ़ाज़ मन्कूल हैं, यहाँ एक मुख़्तसर दुआ नक़ल की जाती है, जिसे इमाम अबूदाऊद ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन् जाबिर रजि. के वास्ते से रसूलुल्लाह स्व.से नक़ल किया है।

''اَللّٰهُمَّ اسْقِنَا غَيْثًا مُّغِيْثًا، مُرِيْئًا مُرِيْعًا، نَّافِعًا غَيْرَ ضَارٍّ، عَاجِلًا غَيْرَ آجِلٍ''

''ऐ अल्लाह! हमें भरपूर, ख़ूशगवार, शादाबी लाने वाली, नफ़ाबक्ष, ग़ैर नुक़सानदे,जल्दी न के ताख़ीर वाली बारिश अता फ़र्माइए''। (किताबुल् फ़तावा:२/३७७ ता ३८३ ज़मज़म पब्लिशर्ज़ कराची)

सलातुत्तस्बीह् की फ़ज़ीलत् :

नफ़ल नमाज़ों में सलातुत्तस्बीह् बहुत अज़ीमुश्शान् नमाज़् है,जिस की बड़ी फ़ज़ीलत और बड़ा सवाब है,छोटे बड़े हर क़िस्म के गुनाहों को मिटाने वाली है,बड़े से बड़े गुनह्गार के लिए बख्शिश का ज़रिआ है,इसी लिए रसूले करीम स्व.ने अपने चचा हज़्रत अब्बास रजि.को और अपने चचाज़ाद भाई हज़्रत जाफ़र बिन् अबी तालिब रजि.और हज़्रत अब्दुल्ला बिन् उमर रजि.और दीगर सहाबाए किराम रजि. को बहुत ही शफ़क़त और बड़ी ताकीद से इस की तालीम दी है,जो इस नमाज़् की फ़ज़ीलत और अहमियत् के लिए काफ़ी है, इसी लिए उलमा, सुलहा, मुहद्दिसीन्, फ़ुक़हा, और सुफ़ियाए किराम इस का एहतिमाम करते रहे हैं, और दुसरों को इस की तालीम देते रहे हैं।

हदीस में सलातुत्तस्बीह् की बहुत फ़ज़ीलत वारिद हुई है; बल्की अबूदाऊद की एक रिवायत में मन्कूल् है के रसूलुल्लाह् स्व. ने अपने एक सहाबी (हज़्रत अब्दुल्लाह् बिन् अम्र रजि.)को सलातुत्तस्बीह् की तल्क़ीन् करने के बाद उन से फ़र्माया :''तुम अगर बिल्फ़र्ज़ दुनिया के सब से बड़े गुनह्गार होगे तो भी इस की बरकत से अल्लाह तआला तुम्हारी मग़फ़िरत फ़र्मा देगा''। (अबूदाऊद : किताबुत्ततव्वुअ् बाबु सलातुत्तस्बीह्) मुन्दर्जए ज़ेल् अहादीस में इस नमाज़् की फ़ज़ीलत और तरीक़ा मज़्कूर है।

हज़्रत अब्दुल्ला बिन् अब्बास रजि.से रिवायत है के रसूलुल्लाह् स्व. ने एक दिन अपने चचा हज़्रत अब्बास रजि.से फ़र्माया: ऐ अब्बास! ऐ मेरे मोहतरम चचा! क्या मैं आप की ख़िदमत में एक गिराँ क़द्र अतिया और एक तोहफ़ा पेश करूँ? क्या मैं आप को एक ख़ास बात बताऊँ ? क्या मैं आप के दस काम और आप की दस ख़िदमतें करूँ ? यानी ऐसा अमल् बताऊँ (जिस से आप को दस अज़ीमुश्शान् फ़ायदें हासिल् हों, वो ऐसा अमल् है) के जब आप उस को करेंगे तो अल्लाह् तआला शानुहु आप के सारे गुनाह् मुआफ़ फ़र्मा देंगे, अगले भी, और पिछले भी, पुराने भी, और नए भी, भूल् चूक से होने वाले भी, और दानिस्ता होने वाले भी,सग़ीरा भी, कबीरा भी, ढके छुपे भी, और ऐलेनिया होने वाले भी। वो अमल् सलातुत्तस्बीह् है।

सलातुत्तस्बीह का पहला तरीका और उस का तरीक़ा ये है के : आप चार रकअत् नमाज़् पढ़ें और हर रकअत् में सूरए फ़ातिहा और कोई दूसरी सूरत पढ़ें,फिर जब आप पहली रकअत् में क़िराअत् से फ़ारिग़ हो जाएँ; तो क़ियाम ही की हालत में पंदराह् दफ़ा कहें : ''سُبْحَانَ اللهِ وَالْحَمْدُلِلّٰهِ وَلَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَاللهُ أَكْبَرْ''

फिर इस के बाद रुकूअ् करें और रुकूअ् में भी यही कलिमा दस दफ़ा

पढ़ें,फिर रुकूअ् से उठकर क़ौमा में भी यही कलिमा दस दफ़ा कहें,फिर सजदे में चले जाएँ और इस में भी यही कलिमा दस दफ़ा कहें,फिर सजदे से उठकर जलसे में यही कलिमा दस दफ़ा कहें,फिर दुसरे सजदे में भी यही कलिमा दस दफ़ा कहें,फिर दुसरे सजदे के बाद भी (खड़े होने से पहले) ये कलिमा दस दफ़ा कहें,चारों रकअतें इसी तरह् पढ़ें, और इसी तर्तीब से हर रकअत् में ये कलिमा पचहत्तर दफ़ा कहें,(मेरे चचा!) अगर आप से हो सके तो रोज़ाना ये नमाज़् पढ़ा करें,और अगर रोज़ाना न पढ़ सकें तो हर जुमआ के दिन पढ़ लिया करें, और अगर आप ये भी न कर सकें तो साल् में एक दफ़ा पढ़ लिया करें, और अगर ये भी न हो सके तो कम अज़् कम ज़िंदगी में एक दफ़ा पढ़ ही लें। (सलातुत्तस्बीह् के फ़ज़ाइल् व मसाइल् : मुफ्ती अ.रऊफ़ सखरवी मुद्द ज़िल्लुह ६)

फ़ायदा : इस हदीस से वाज़ेह् हुवा के नफ़ल नमाज़ों में सलातुत्तस्बीह् का एक ख़ास मक़ाम और दर्जा है, जिसे हुज़ूर स्व.ने तोहफ़ा, बख़शिश, अतिया और ख़ूशख़बरी फ़र्माया है और अल्लाह् तआला इस की बरकत् से बंदे के अगले पिछले, नए पुराने, जान बूझकर किए हुए और बिला इरादह् किए हुए, छोटे बड़े,छुपकर किए हुए, और ऐलानिया किए हुए, सारे ही गुनाह् मुआफ़ फ़र्मा देते हैं, चाहे वो शख़्स दुनिया के तमाम लोगों से ज़्यादा गुनह्गार हो। इसलिए हस्बे सहूलत इस नमाज़् को मअ्मूलाते ज़िंदगी में शामिल् कर लेना चाहिए।

हुज़ूर अकरम् स्व.ने अपने चचाज़ाद भाई हज़्रत जाफ़र बिन् अबू तालिब् रजि.को हब्शा भेज दिया था, जब वो वहाँ से वापस मदीना मुनव्वरह् पहुँचे तो आँहज़्रत स्व.ने उन्हें गले से लगाया और उनकी पेशानी को बोसा दिया और फ़र्माया : मैं तुम्हें एक(ख़ास) चीज़् दूँ ? एक ख़ूशख़बरी सुनाऊँ? एक बख़शिश दूँ ? एक तोहफ़ा दूँ? उन्हों ने अर्ज़ किया : ज़रूर दीजीए। हुज़ूरे अक़दस् स्व. ने फ़र्माया : चार रकअत् नमाज़् पढ़ो। (मुराद सलातुत्तस्बीह् है जिस की तफ़सील् ऊपर हदीस में गुज़री । (सलातुत्तस्बीह् के फ़ज़ाइल् व मसाइल् ७)

सलातुत्तस्बीह् का दुसरा तरीक़ा :

हज़्रत अब्दुल्ला बिन् मुबारक रह.ने सलातुत्तस्बीह् के बारे में फ़र्माया : चार रकअत की निय्यत बांधकर पहले तकबीरे तहरीमा कहें फिर

पढ़ें, ''سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالٰى جَدُّكَ وَلَا إِلٰهَ غَيْرُكَ''

फिर पंदरह् दफ़ा سُبْحَانَ اللهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَاللهُ أَكْبَرْ

पढ़े और रुकूअ् से पहले दस मर्तबा पढकर रुकूअ् में जाएँ, रुकूअ् में उस तस्बीह्

को दस मर्तबा पढ़ें, फिर क़ौमा में दस मर्तबा पढ़ें,फिर सजदे में दस मर्तबा पढ़ें, फिर जलसे में दस मर्तबा पढ़ें, फिर दुसरे सजदे में दस मर्तबा पढ़ें। इस तरह् हर रकअत् में पचहत्तर तस्बीहात् हो गईं, इसी तर्तीब से चार रकअत् पूरी करें, हर रकअत् के शुरू में ये तस्बीह् पंदरह् मर्तबा पढ़ें, फिर क़िराअत् करें, फिर दस मर्तबा ये तस्बीह् पढ़ें। अगर रात को कोई शख़्स ये नमाज़् पढ़े तो मेरे नज़्दीक बेहतर ये है के दो दो रकअत् कर के पढ़े और अगर दिन में पढ़े तो इख़्तियार है, चाहे एक सलाम से पढ़े और चाहे दो सलाम से पढ़े। (सलातुत्तस्बीह् के फ़ज़ाइल् व मसाइल् ८)

हज़्रत अब्दुल्लाह बिन् मुबारक रह.ने ये भी फ़र्माया : के रुकूअ् और सजदे में पहले तीन दफ़ा سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيْمِ और سُبْحَانَ رَبِّيَ الْأَعْلٰى पढ़ें उस के बाद मज़्कूरह् तस्बीह् पढ़ें। (सलातुत्तस्बीह् के फ़ज़ाइल् व मसाइल् ८-९)

हज़्रत अब्दुल् अज़ीज़् बिन् दाऊद रह. जो हज़्रत अब्दुल्ला बिन् मुबारक रह.से भी ऊँचे दर्जे के हैं,वो फ़र्माते हैं: जो शख़्स जन्नत का तालिब हो उस को सलातुत्तस्बीह् ज़रूर पढ़नी चाहिए। (सलातुत्तस्बीह् के फ़ज़ाइल् व मसाइल् ९)

हज़्रत अबू उस्मान ज़ाहिद रह. फ़र्माते हैं: ग़मों और मुसीबतों के वक़्त मैं ने सलातुत्तस्बीह् से बढ़कर कोई अमल् नहीं देखा, यानी उस के पढ़ने से रंज व ग़म् और मुसीबतें दूर हो जाती हैं। (सलातुत्तस्बीह् के फ़ज़ाइल् व मसाइल् ९)

फ़ायदा : रंज व ग़म और तमाम मसाइब से नजात मिलना हर शख़्स के दिल की आवाज़ है, और जन्नत का तालिब हर मोमिन है, लिहाज़ा सलातुत्तस्बीह का मामूल बनाना चाहिए; ताके ये मक़ासिद हासिल हों जो करेगा वो पाएगा महज़ सोचने से क्या होगा ?।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक सलातुत्तस्बीह पढ़ा करते थे और यही सुलहा का तरीक़ा रहा है के इस नमाज़ को एक दुसरे से लिया करते थे,यानी एक दुसरे से इस को सीखते,हासिल करते और इस का मामूल बनाते थे। (सलातुत्तस्बीह् के फ़ज़ाइल् व मसाइल् ९)

शामिया में है के सलातुत्तस्बीह में बहुत ज़्यादा सवाब है और इस में बाज़ मुहक़्क़िक़ीन के हवाले से ज़िक्र किया है के सलातुत्तस्बीह की अज़ीम फ़ज़ीलत सुनकर भी अगर कोई इस को छोड़ दे तो वो दीन की ना क़दरी करने वाला ही है। (सलातुत्तस्बीह् के फ़ज़ाइल् व मसाइल् १०)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजि.हर जुमआ को ज़वाल के बाद,नमाज़े जुमआ से पहले ये नमाज़ पढ़ा करते थे, इस नमाज़ के बारे में यही दर्मीयानी दर्जा है; लिहाज़ा हर जुमआ को ज़वाल के बाद सलातुत्तस्बीह पढ़ने का मामूल बनाना

चाहिए। (सलातुत्तस्बीह के फ़ज़ाइल व मसाइल ११)

अहादीस में सलातुत्तस्बीह् अदा करने के दो तरीक़े बताए गए हैं,एक तरीक़ा वो है जो हुज़ूर स्व. ने अपने चचा हज़्रत अब्बास रजि.को तलक़ीन फ़र्माया है,और एक तरीक़ा हज़्रत अब्दुल्ला बिन् मुबारक रह. से मंक़ूल् है,ये रिवायात तिर्मिज़ी शरीफ़ में मौजूद हैं,उन तरीक़ों में बाज़् उलमाए किराम् ने हज़्रत अब्बास रजि.के तरीक़े को अफ़ज़ल् क़रार दिया है और बाज़् हज़्रात ने अब्दुल्लाह् बिन् मुबारक रह. के तरीक़े को तर्जीह् दी है, बेहतर ये है के कभी एक तरीक़े पर और कभी दुसरे तरीक़े पर अमल् कर लें। (सलातुत्तस्बीह् के फ़ज़ाइल् व मसाइल् १२)

नमाज़े तहज्जुदः

नमाज़े तहज्जुद सुन्नत है, नबीए करीम स्व. हमेशा इस को पढ़ा करते थे,और अपने असहाब को इस के पढ़ने की तर्ग़ीब देते थे,इस के फ़ज़ाइल बहुत अहादीस में वारिद हैं, नबीए करीम स्व. ने फ़र्मायाः के फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद नमाज़े तहज्जुद का मर्तबा है। (इल्मुल् फ़िक़हः१८४)

हज़राते सुफ़िया फ़र्माते हैंः के कोई शख़्स बग़ैर नमाज़े तहज्जुद के विलायत के दर्जे को नहीं पहूँच सकता। इस में शक नहीं के ये नमाज़ तमाम सुलहाए उम्मत का मामूल है,सहाबा रजि. से लेकर इस वक़्त तक; बलके एक हदीस में है के अगली उम्मत वाले भी इस नमाज़ को पढ़ते थे। (इल्मुल् फ़िक़हः १८४)

नमाज़े तहज्जुद का वक़्त इशा की नमाज़ के बाद है,सुन्नत ये है के इशा की नमाज़ पढ़ कर सोए, इस के बाद उठकर नमाज़े तहज्जुद पढ़े। (इल्मुल् फ़िक़हः १८४)

बेहतर ये है के आधी रात के बाद पढ़े, कम से कम तहज्जुद की नमाज़ दो रकअत और ज़्यादा से ज़्यादा दस रकअत मन्क़ूल है। और अकसर आप स्व.की आदत आठ रकअत पढ़ने की थी, इसी वास्ते फ़ुक़हा ने आठ रकअतें इख़्तियार की हैं। (इल्मुल् फ़िक़हः १८४)

नमाज़े इशराकः

हज़रत अनस बिन मालिक रजि.से हुज़ूर स्व.का इर्शाद इस तरह मन्क़ूल हैः के जिस ने जमात के साथ सुबह की नमाज़ पढ़ी फिर तुलूए आफ़ताब तक अल्लाह तआला के ज़िक्र में मश्ग़ूल रहा फिर आफ़ताब तुलूअ् होने के बाद उसने दो रकअत नमाज़ पढ़ी तो उस को एक हज और एक उमरे का सवाब मिलेगा,फिर आप स्व.ने अज़ राहे ताकीद इर्शाद फ़र्मायाः पूरे पूरे हज व उमरह्

का। (किताबुल् फ़तावा:२/३६३ज़मज़म पब्लिशर्ज)

हज़रत मुआज़ बिन अनस जुहनी रजि. की रिवायत मे है दो रकअत और हज़रत अबुदर्दा और हज़रत अबूज़र रजि.की रिवायत में चार रकअत का ज़िक्र है,हज़रत अबूदर्दा और हज़रत अबूज़र रजि.की रिवायत में है के अल्लाह तआला फ़र्माते हैं: जो शख़्स दिन की इब्तिदा में ये नमाज़ पढ़ ले मैं दिन के अख़ीर तक उस की किफ़ायत करूँगा, और हज़रत मुआज़ रजि.की हदीस में है के अगर उसके गुनाह समंदर के झाग के बराबर हों तो अल्लाह उन्हें मुआफ़ कर देंगे। इस से इस नमाज़ की अहमियत और फ़ज़ाइल व फ़वाइद का अंदाज़ा लगाया जा सकता है। (किताबुल् फ़तावा:२/३६०ज़मज़म पब्लिशर्ज)

नमाज़े चाश्तः

नमाज़े चाश्त का वक़्त आफ़ताब के ख़ूब तुलूअ् हो जाने पर शूरु होता है। जब तुलूए आफ़ताब और आगाज़े जुहर के दर्मियान कुल वक़्त का आधा हिस्सा गुज़र जाए तो ये चाश्त के लिए अफ़ज़ल वक़्त है। नमाज़े चाश्त के लिए कम अज़ कम चार ४ और ज़्यादा से ज़्यादा बारा १२ रकआत हैं। (मुस्लिम:७१९)

उम्मुल् मुअ्मिनीन हज़रत आइशा रजि.से मरवी है के हुज़ूर स्व.चाश्त की चार रकआत पढ़ते थे और अल्लाह तआला जिस क़द्र ज़्यादा चाहता उतनी पढ़ लेते थे।। (मुस्लिम:७१९)

हज़रत अनस बिन मालिक रजि. से रिवायत है के हुज़ूर स्व.ने फ़र्माया: जो शख़्स चाश्त की बारा रकअतें पढ़ेगा अल्लाह तआला उसके लिए जन्नत में सोने का महल बनाएगा।

शैख़ुल् इस्लाम हज़रत मुफ्ती मुहम्मद तक़ी उस्मानी साहब दामत बरकातुहुम् ने चाश्त की कितनी रकअतें पढी जाएँ इस इस्तिफ्ता के जवाब में लिख़्खा है के चार रकअतें पढ़ना बेहतर है। (फ़तावा उस्मानी:१/४३४)

तहिय्यतुल् मस्जिदः

ये नमाज़ उस शख़्स के लिए सुन्नत है जो मस्जिद में दाख़िल हो। अगर मस्जिद में आते ही कोई फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ी जाए या कोई सुन्नत अदा की जाए तो वही फ़र्ज़ और सुन्नत तहिय्यतुल् मस्जिद के क़ायम मक़ाम हो जाएगी यानी उस के पढ़ने से तहिय्यतुल् मस्जिद का सवाब मिल जाएगा; अगर्चे उस में तहिय्यतुल् मस्जिद की निय्यत नहीं की गई । (इल्मुल् फ़िक़ह :१८७)

सलातुज़्ज़वालः

मस्नून नमाज़ों में ''सलातुज़्ज़वाल'' भी है, अस्ल ये है के औक़ाते मक्रूहा में नमाज़ नहीं पढी जा सकती, इतने सारे औक़ात में अल्लाह की बंदगी से

महरूम रहना और अल्लाह के ज़िक्र के बग़ैर अपना वक़्त गुज़ारना मोमिन के शायाने शान नहीं है, इसलिए औक़ाते मक्रूहा के फ़ौरन बाद कोई न कोई नफल नमाज़ रख़्खी गई है। (क़ामूसुल फिक़्ह ४/२७९)

गुरूबे आफ़ताब के बाद ''अव्वाबीन'' रख़्खी गई है, तुलूए आफ़ताब के बाद सलातुज़्ज़ुहा ''चाश्त की नमाज़'' और ज़वाल के बाद सलातुज़्ज़वाल रख़्खी गई है। हनफ़िया के नज़दीक सलातुज़्ज़वाल दो रकअत है। (क़ामूसुल फिक़्ह ४/२७९)

चुनाँचे हज़रत अब्दुल्ला बिन उमर रजि. से मरवी है के मैं ने रसूलुल्लाह स्व.के साथ दो रकअत् ज़ुहर से पहले और दो रकअत् ज़ुहर के बाद पढी।

लेकिन मुहद्दिसीन का रुजहान इस तरफ़ है के सलातुज़्ज़वाल चार रकअत् है, चुनाँचे हज़रत अब्दुल्ला बिन साइब रजि. से मरवी है के आप स्व.जुहर से पहले चार रकअत पढा करते थे और आप स्व. ने इस के बारे में फ़र्माया : के इस वक़्त आसमान के दरवाज़े खुलते हैं इसलिए मेरी ख़्वॉहिश है के इस वक़्त मेरा कोई नेक अमल आसमान पर पहूँचे, इमाम तिर्मिज़ी ने ये भी नक़ल किया है के इन चार रकअतों को एक ही सलाम में अदा करने का मअ्मूल था। (क़ामुसुल् फ़िक़्ह्: ४/२७९,२८०)

अव्वाबीनः

नफल नमाज़ों में एक अव्वाबीन है, ये मग़रिब के बाद मस्नून है और इसकी छे रकअतें हैं। हज़रत अबू हुरैरह् रजि. से मरवी है के आप स्व.ने फ़र्माया के जिस ने मग़रिब की छे रकअतें पढीं और उस के दर्मियान कोई बुरी बात नही की, उस को बारा साल इबादत करने का अज्र हासिल होगा।

बाज़ रिवायात में बीस रकअत का भी ज़िक्र है, चुनाँचे हज़रत आइशा रजि.से मरवी है के जिस ने मग़रिब के बाद बीस रकअत नमाज़ पढी अल्लाह तआला उस के लिए जन्नत में घर बनाएँगे। (क़ामुसुल् फ़िक़्ह्:४/२७९)

छूटी हुई नमाज़ों की क़ज़ाः

इस्लाम में नमाज़ की जो अहमियत है और क़ुरआन व हदीस में जिस एहतिमाम और ताकीद व तकरार (कई मर्तबा) के साथ नमाज़ का हुक्म दिया गया है इस के पेशे नज़र ये बात बईद (ना मुम्किन) है के कोई मुसलमान क़सदन (जान बूझकर) नमाज़ छोड दे; बलके अहदे नुबुव्वत में तो मुनाफ़िक़ीन की भी शायद व बायद (कभी कभी) नमाज़ फ़ौत होती थी।

इसी लिए हदीस में कहीं भी नमाज़ छोड़ने का ज़िक्र नहीं; बलके भूल या नींद की वजह् से नमाज़ के छूट जाने का ज़िक्र मिलता है के यही मोमिन के

शायाने शान है। इसी लिए फ़ुक़हा ने भी आम तौर पर ''क़ज़ाए मतरूकात'' (छोड़ी हुई नमाज़ों की क़ज़ा) के बजाए ''कज़ाए फ़वाइत'' (छूटी हुई नमाज़ों की क़ज़ा)का उनवान इख़्तियार किया है।

क़ज़ा नमाज़ों के अदा करने का आसान तरीक़ा :

आदमी के बालिग़ होते ही अल्लाह् सुबहानहु व तआला के वो हुक़ूक़ लाज़िम हो जाते हैं जो बालिग़ होने से पहले लाज़िम नहीं थे, मसलन् नमाज़् फ़र्ज़ हो जाती है, रोज़े फ़र्ज़ हो जाते हैं, अगर किसी के पास निसाब् के बक़द्र माल् है तो उस पर ज़कात फ़र्ज़ हो जाती है, कुर्बानी और सदक़ए फ़ित्र वाजिब हो जाता है और इस्तिताअत् (ताक़त) हो तो हज भी फ़र्ज़ हो जाता है।

अगर बालिग़ होने से लेकर अब तक कुछ नमाज़ें छूट गई हैं और उनकी क़ज़ा नहीं की हैं तो ये नमाज़ें महज़् तोबा से माफ़ नहीं होंगी; बल्की उनकी क़ज़ा करनी ज़रूरी है।

छूटी हुई नमाज़ों की तादाद सही तौर पर मालूम नहीं,तो अब अंदाज़ा लगाकर उनकी तादाद नोट कर लें, इस के बाद क़ज़ा नमाज़ें पढ़नी शुरू करें इस तरह् क़ज़ा करने की सूरत में बआसानी हिसाब हो सकेगा, अगर बग़ैर अंदाज़ा लगाए और डायरी में नोट किए बग़ैर क़ज़ा पढ़नी शुरू कर दी तो हमें नफ्स धोका देगा के तू मुसल्सल् छे महीने से क़ज़ा कर रहा है अब तो पूरी क़ज़ा हो गई होगी, हम नफ्स के धोके में आकर मुत्मइन् हो बैठेंगे के हमारे ज़िम्मे अब कोई क़ज़ा नमाज़् बाक़ी नहीं; हालाँके हक़ीक़त में हमारे ज़िम्मे और भी नमाज़े बाक़ी हैं।

मज़ीद तफ्सील् और इसी तरह् रोज़ा, ज़कात के क़ज़ा का तरीक़ा सरपरस्ते जामिया हाज़ा व शेख़ुलहदीस जामिया इस्लामिया तालीमुद्दीन डाभेल हज़्रत अक़्दस मुफ्ती अहमद साहब ख़ानपूरी दामत् बरकातुहुम् की किताब ''बैअ्त होने वालों के लिए हिदायात'' में देखी जा सकती है।

कज़ा नमाज़ो की अदाईगी में सहुलत और याददाश्त के लिये आगे सफाहात में चार्ट बनायें गये हैं, अपनी छुटी हुई नमाजें पढने के बाद इस में निशान लगा दें ताके इत्मिनान हो के निशान ज़दा नमाजें अदा कर ली गई हैं।

नोट : नमाज़े फज्र के लिये (**F**) की अलामत, ज़ोहर के लिये (**Z**) अस्र के लिये (**A**) मगरीब के लिये (**M**) ईशा के लिये (**I**) और नमाज़ें वित्र के लिये (**V**) की अलामत लगाई गई हैं।

Year :

Dt.	January	February	March
	F Z A M I V	F Z A M I V	F Z A M I V
1	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
2	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
3	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
4	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
5	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
6	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
7	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
8	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
9	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
10	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
11	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
12	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
13	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
14	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
15	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
16	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
17	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
18	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
19	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
20	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
21	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
22	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
23	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
24	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
25	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
26	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
27	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
28	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
29	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
30	○○○○○○		○○○○○○
31	○○○○○○		○○○○○○

Dt.	April	May	June
	F Z A M I V	F Z A M I V	F Z A M I V
1	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
2	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
3	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
4	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
5	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
6	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
7	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
8	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
9	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
10	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
11	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
12	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
13	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
14	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
15	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
16	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
17	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
18	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
19	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
20	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
21	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
22	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
23	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
24	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
25	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
26	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
27	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
28	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
29	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
30	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
31		○○○○○○	

Dt.	July	August	September
	F Z A M I V	F Z A M I V	F Z A M I V
1	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
2	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
3	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
4	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
5	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
6	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
7	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
8	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
9	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
10	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
11	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
12	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
13	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
14	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
15	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
16	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
17	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
18	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
19	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
20	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
21	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
22	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
23	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
24	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
25	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
26	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
27	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
28	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
29	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
30	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
31	○○○○○○	○○○○○○	

Dt.	October	November	December
	F Z A M I V	F Z A M I V	F Z A M I V
1	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
2	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
3	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
4	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
5	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
6	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
7	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
8	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
9	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
10	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
11	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
12	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
13	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
14	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
15	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
16	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
17	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
18	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
19	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
20	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
21	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
22	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
23	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
24	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
25	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
26	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
27	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
28	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
29	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
30	○○○○○○	○○○○○○	○○○○○○
31	○○○○○○		○○○○○○

Year :

Dt.	January						February						March					
	F	Z	A	M	I	V	F	Z	A	M	I	V	F	Z	A	M	I	V
1	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
2	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
3	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
4	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
5	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
6	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
7	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
8	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
9	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
10	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
11	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
12	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
13	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
14	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
15	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
16	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
17	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
18	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
19	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
20	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
21	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
22	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
23	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
24	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
25	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
26	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
27	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
28	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
29	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
30	○	○	○	○	○	○							○	○	○	○	○	○
31	○	○	○	○	○	○							○	○	○	○	○	○

Dt.	April						May						June					
	F	Z	A	M	I	V	F	Z	A	M	I	V	F	Z	A	M	I	V
1	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
2	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
3	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
4	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
5	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
6	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
7	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
8	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
9	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
10	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
11	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
12	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
13	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
14	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
15	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
16	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
17	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
18	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
19	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
20	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
21	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
22	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
23	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
24	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
25	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
26	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
27	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
28	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
29	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
30	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
31							○	○	○	○	○	○						

Dt.	July						August						September					
	F	Z	A	M	I	V	F	Z	A	M	I	V	F	Z	A	M	I	V
1	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
2	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
3	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
4	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
5	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
6	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
7	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
8	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
9	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
10	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
11	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
12	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
13	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
14	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
15	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
16	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
17	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
18	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
19	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
20	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
21	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
22	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
23	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
24	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
25	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
26	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
27	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
28	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
29	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
30	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
31	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○						

Dt.	October						November						December					
	F	Z	A	M	I	V	F	Z	A	M	I	V	F	Z	A	M	I	V
1	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
2	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
3	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
4	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
5	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
6	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
7	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
8	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
9	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
10	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
11	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
12	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
13	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
14	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
15	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
16	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
17	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
18	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
19	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
20	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
21	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
22	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
23	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
24	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
25	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
26	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
27	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
28	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
29	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
30	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○	○
31	○	○	○	○	○	○							○	○	○	○	○	○

पहले तरीके के मुताबिक सलातुत्तस्बीह मे पढी जानेवाली तस्बीहात एक नज़र में

पहली रकअत्	कियाम में सुर–ए–फातिहा व किरात के बाद १५ मर्तबा	रुकुअ में रुकुअ की तस्बीह पढने के बाद १० मर्तबा	कौमा में तस्मिया व तहमीद के बाद १० मर्तबा	पहले सज़दे में तस्बीह के बाद १० मर्तबा	जलसा में सज़्दे से उठकर १० मर्तबा	दुसरे सज़दे में तस्बीह के बाद १० मर्तबा	दुसरे सज़दे के बाद बैठकर १० मर्तबा
दुसरी रकअत्	कियाम में सुर–ए–फातिहा व किरात के बाद १५ मर्तबा	रुकुअ में रुकुअ की तस्बीह पढने के बाद १० मर्तबा	कौमा में तस्मिया व तहमीद के बाद १० मर्तबा	पहले सज़दे में तस्बीह के बाद १० मर्तबा	जलसा में सज़्दे से उठकर १० मर्तबा	दुसरे सज़दे में तस्बीह के बाद १० मर्तबा	दुसरे सज़दे के बाद बैठकर १० मर्तबा
तिसरी रकअत्	कियाम में सुर–ए–फातिहा व किरात के बाद १५ मर्तबा	रुकुअ में रुकुअ की तस्बीह पढने के बाद १० मर्तबा	कौमा में तस्मिया व तहमीद के बाद १० मर्तबा	पहले सज़दे में तस्बीह के बाद १० मर्तबा	जलसा में सज़्दे से उठकर १० मर्तबा	दुसरे सज़दे में तस्बीह के बाद १० मर्तबा	दुसरे सज़दे के बाद बैठकर १० मर्तबा
चौथी रकअत्	कियाम में सुर–ए–फातिहा व किरात के बाद १५ मर्तबा	रुकुअ में रुकुअ की तस्बीह पढने के बाद १० मर्तबा	कौमा में तस्मिया व तहमीद के बाद १० मर्तबा	पहले सज़दे में तस्बीह के बाद १० मर्तबा	जलसा में सज़्दे से उठकर १० मर्तबा	दुसरे सज़दे में तस्बीह के बाद १० मर्तबा	दुसरे सज़दे के बाद बैठकर १० मर्तबा

दुसरे तरीके के मुताबिक सलातुत्तस्बीह मे पढी जानेवाली तस्बीहात एक नज़र में

पहली रकअत्	कियाम में सना के बाद फातिहा से पहले १५ मर्तबा	कियाम किरात के बाद रुकुअ से पहले १० मर्तबा	रुकुअ रुकुअ की तस्बीह पढने के बाद १० मर्तबा	कौमा तस्मिया व तहमीद के बाद १० मर्तबा	पहला सज़्दा तस्बीह के बाद १० मर्तबा	जलसा सज़्दे से उठकर १० मर्तबा	दुसरा सज़्दा तस्बीह के बाद १० मर्तबा
दुसरी रकअत्	कियाम में फातिहा से पहले १५ मर्तबा	कियाम किरात के बाद रुकुअ से पहले १० मर्तबा	रुकुअ रुकुअ की तस्बीह पढने के बाद १० मर्तबा	कौमा तस्मिया व तहमीद के बाद १० मर्तबा	पहला सज़्दा तस्बीह के बाद १० मर्तबा	जलसा सज़्दे से उठकर १० मर्तबा	दुसरा सज़्दा तस्बीह के बाद १० मर्तबा
तिसरी रकअत्	कियाम में फातिहा से पहले १५ मर्तबा	कियाम किरात के बाद रुकुअ से पहले १० मर्तबा	रुकुअ रुकुअ की तस्बीह पढने के बाद १० मर्तबा	कौमा तस्मिया व तहमीद के बाद १० मर्तबा	पहला सज़्दा तस्बीह के बाद १० मर्तबा	जलसा सज़्दे से उठकर १० मर्तबा	दुसरा सज़्दा तस्बीह के बाद १० मर्तबा
चौथी रकअत्	कियाम में फातिहा से पहले १५ मर्तबा	कियाम किरात के बाद रुकुअ से पहले १० मर्तबा	रुकुअ रुकुअ की तस्बीह पढने के बाद १० मर्तबा	कौमा तस्मिया व तहमीद के बाद १० मर्तबा	पहला सज़्दा तस्बीह के बाद १० मर्तबा	जलसा सज़्दे से उठकर १० मर्तबा	दुसरा सज़्दा तस्बीह के बाद १० मर्तबा

दाईमी तक्वीम

टाईम टेबल पर अमल के लिये खास हिदायात

- नमाज़ के औकात और माहे रमजान में सहरी व इफ्तार के लिये शरियत की बतायी हुयी निशानियां ही असल हैं
- ये तकवीम(टाईमटेबल) हिसाबी गिन्ती है। इस पर इतना भरौसा करना के एक आद मिनट भी आगे पिछे न हो जाये यह ठिक नही। बल्की घडी का वक्त आगे पिछे होता रहता है, इसलिये जरुरी है के नमाज़ रोजे की अदाईगी में निचे बताई हुयी हिदायात पर अमल करें

१) सुबह के लिखे हुये वक्त से १० मिनट पहले सहरी का आखरी वक्त समझे।
२) सुबह के लिखे हुये वक्त से ५ मिनट बाद फज़्र की आजान दि जाये ।
३) तुलुअ के बाताये हुये वक्त से पहले ही फज्र की नमाज पढली जाये।
४) निस्फुन्नहार के वक्त से ५ मिनट पहले और ५ मिनट बाद नफलें न पढी जाये।
५) अस्र का जो वक्त लिखा गया है उसके ५ मिनट बाद अज़ान दी जाये ।
६) गुरुब के बताये हुये वक्त से ५ मिनट बाद मग़रीब की अज़ान दी जाये।
७) इशा के शुरु का वक्त लिखा है, उस वक्त से कम अज़ कम ५ मिनट बाद अज़ान दें।

गिन्ती के बारे में जरुरी इत्तिला

- ये तक़्वीम (टाइम टेबल) शहर सांगली अर्ज़ुल बलद 16.9 N तुलुल बलद 74.6 E के लिए हिसाब करके बनाई गई है।
- ये तक़्वीम हर शहर और गांव के लिए भी काबिले अमल है जो अर्ज़ुल बलद 16.3/17.3 के दर्मियान में आया है।
- सांगली शहर दुर जगहों के लिए तुलुल बलद के फर्क के लिए १ डिग्री के ४ मिनट के हिसाब से कमी या जियादती करनी होगी जो किसी जाननेवाले से मालुम करना जरुरी है।
- तहसील के तुलुल बलद के फर्क की वजह से हसबे ज़ेल मिनटो का फर्क हो जाता है तो टाईम टेबल में कमी या जियादती करके फिर हिदायत में दी गई बातों पर अमल करना जरुरी है। मुकर्ररा वक्त शहर सांगली, मिरज, उदगांव और अतराफ के लिये है।
- गिन्ती करने में घंटा और मिनट के साथ आधे मिनट से कम सेकंडो को छोड दिया गया है। और उससे ज्यादा या कम सेंकडो में ज्यादती करके मुकम्मल(१) मिनट कर लिया गया है।
- तजरबा और मुशाहदा से साबित है के अल्लाह तआला के हुक्म से सुरज की चाल ऐसी है के उस में हर साल थोडे सेकंडों का अपनी घडीयों में फर्क हो जाता है लेकीन जिस साल के लिए गिन्ती की गई है वही तक्रीबन हर चौथे साल आती है और हर ३३ साल में फिर कर वही वक्त आजाता है जिस से ये तक़्वीम बहुत साल तक काम देगी इन्शाअल्लाह।
- सुबह और इशा का जो वक्त लिखा हुआ है जब सुरज उफ़ुक़ से १८ डिग्री नीचे होता है उस दिन सुबह सवेरे सफेद रोशनी फैलती है और शाम को सफेद रोशनी गाईब हो जाती है, १९ डिग्री से हिसाब करें तो ४ मिनट से ५ मिनट का फर्क हो जाता है।
- तुलुअ का वक्त वो है जबके सुरज का उपर का किनारा जहिर हो जाता है, और गुरुब का वक्त वो है जबके सुरज मुकम्मल छुप जाता है।
- निस्फुन्नहार का वक्त वो है जबके सुरज ठिक सर पर आजाये, उस वक्त हर एक का साया सब से छोटा हो जाता है और उसे सायए असली कहा जाता है।
- अस्रे शाफई का वक्त वो है जबके हर एक चीज़ का साया सायए असली के अलावा उस चीज़ की उंचाइ से बराबर होजाए जिसे वक्ते मिस्ल भी कहा जाता है।
- अस्रे हनफी का वक्त वो है जबके हर एक चीज़ का साया सायए असली के अलावा उस चीज़ की उंचाइ से दोगुना होजाए जिसे वक्ते मिस्लैन भी कहा जाता है।
- तजरबा और मुशाहदा से लिखी हुई ये तक़्वीम है गलती हो तो तसहीह फरमाकर उस पर अमल करें और हमें भी इत्तिला दें तो हम भी मशकूर होंगे।

तय्यार कुनिंदा :- अब्दुलहफीज़ बिन हाफिज़ उमर मनियार, गुफिरलहु वलिवालिदैहि साहिल पट्नी कॉलनी, सुरत-३९५००३.

JANUARY जनवरी

DATE तारीख	SUBH SADIQ सुबह सादिक	TULU तुलुअ	NISFUN NAHAR निस्फुन नहार	ASR SHAFAI अस्र शाफी	ASR HANAFI अस्र हनफी	GURUB गुरुब	ISHA ईशा
1	5.45	7.02	12.36	3.47	4.34	6.10	7.27
2	5.45	7.02	12.36	3.48	4.35	6.11	7.28
3	5.45	7.02	12.37	3.48	4.36	6.11	7.28
4	5.46	7.03	12.37	3.49	4.36	6.12	7.29
5	5.46	7.03	12.38	3.49	4.37	6.13	7.30
6	5.46	7.03	12.38	3.50	4.37	6.13	7.30
7	5.47	7.04	12.39	3.51	4.38	6.14	7.31
8	5.47	7.04	12.39	3.51	4.39	6.15	7.31
9	5.47	7.04	12.40	3.52	4.39	6.15	7.32
10	5.48	7.04	12.40	3.52	4.40	6.16	7.32
11	5.48	7.04	12.40	3.53	4.41	6.16	7.33
12	5.48	7.05	12.41	3.53	4.41	6.17	7.33
13	5.49	7.05	12.41	3.54	4.42	6.18	7.34
14	5.49	7.05	12.42	3.55	4.42	6.18	7.34
15	5.49	7.05	12.42	3.55	4.43	6.19	7.35
16	5.49	7.05	12.42	3.56	4.44	6.19	7.35
17	5.49	7.05	12.43	3.56	4.44	6.20	7.36
18	5.49	7.05	12.43	3.57	4.45	6.21	7.36
19	5.50	7.05	12.43	3.57	4.45	6.21	7.37
20	5.50	7.05	12.44	3.58	4.46	6.22	7.37
21	5.50	7.05	12.44	3.58	4.47	6.22	7.38
22	5.50	7.05	12.44	3.59	4.47	6.23	7.38
23	5.50	7.05	12.44	3.59	4.48	6.24	7.39
24	5.50	7.05	12.45	4.00	4.48	6.24	7.39
25	5.50	7.05	12.45	4.00	4.49	6.25	7.40
26	5.50	7.05	12.45	4.01	4.49	6.25	7.40
27	5.50	7.05	12.45	4.01	4.50	6.26	7.41
28	5.50	7.05	12.46	4.01	4.51	6.26	7.41
29	5.50	7.05	12.46	4.02	4.51	6.27	7.42
30	5.50	7.04	12.46	4.02	4.52	6.28	7.42
31	5.50	7.04	12.46	4.03	4.52	6.28	7.43

FEBRUARY फरवरी

DATE तारीख	SUBH SADIQ सुबह सादिक	TULU तुलुअ	NISFUN NAHAR निस्फुन नहार	ASR SHAFAI अस्र शाफी	ASR HANAFI अस्र हनफी	GURUB गुरुब	ISHA ईशा
1	5.50	7.04	12.46	4.03	4.53	6.29	7.43
2	5.50	7.04	12.46	4.03	4.53	6.29	7.43
3	5.49	7.04	12.47	4.04	4.54	6.30	7.44
4	5.49	7.03	12.47	4.04	4.54	6.30	7.44
5	5.49	7.03	12.47	4.04	4.54	6.31	7.45
6	5.49	7.03	12.47	4.05	4.55	6.31	7.45
7	5.49	7.02	12.47	4.05	4.55	6.32	7.45
8	5.48	7.02	12.47	4.05	4.56	6.32	7.46
9	5.48	7.02	12.47	4.05	4.56	6.32	7.46
10	5.48	7.01	12.47	4.06	4.56	6.33	7.46
11	5.47	7.01	12.47	4.06	4.57	6.33	7.47
12	5.47	7.00	12.47	4.06	4.57	6.34	7.47
13	5.47	7.00	12.47	4.06	4.58	6.34	7.47
14	5.46	7.00	12.47	4.06	4.58	6.35	7.48
15	5.46	6.59	12.47	4.07	4.58	6.35	7.48
16	5.46	6.59	12.47	4.07	4.59	6.35	7.48
17	5.45	6.58	12.47	4.07	4.59	6.36	7.49
18	5.45	6.58	12.47	4.07	4.59	6.36	7.49
19	5.44	6.57	12.47	4.07	4.59	6.36	7.49
20	5.44	6.57	12.47	4.07	5.00	6.37	7.49
21	5.43	6.56	12.47	4.07	5.00	6.37	7.50
22	5.43	6.55	12.46	4.07	5.00	6.37	7.50
23	5.42	6.55	12.46	4.07	5.00	6.38	7.50
24	5.42	6.54	12.46	4.07	5.01	6.38	7.50
25	5.41	6.54	12.46	4.07	5.01	6.38	7.51
26	5.41	6.53	12.46	4.07	5.01	6.39	7.51
27	5.40	6.52	12.46	4.07	5.01	6.39	7.51
28	5.40	6.52	12.46	4.07	5.01	6.39	7.51

MARCH मार्च

DATE तारीख	SUBH SADIQ सुबह सादिक	TULU तुलुअ	NISFUN NAHAR निस्फुन नहार	ASR SHAFAI अस्र शाफी	ASR HANAFI अस्र हनफी	GURUB गुरुब	ISHA ईशा
1	5.39	6.51	12.45	4.07	5.01	6.40	7.52
2	5.38	6.50	12.45	4.07	5.02	6.40	7.52
3	5.38	6.50	12.45	4.07	5.02	6.40	7.52
4	5.37	6.49	12.45	4.07	5.02	6.40	7.52
5	5.37	6.48	12.45	4.06	5.02	6.41	7.53
6	5.36	6.48	12.44	4.06	5.02	6.41	7.53
7	5.35	6.47	12.44	4.06	5.02	6.41	7.53
8	5.35	6.46	12.44	4.06	5.02	6.41	7.53
9	5.34	6.46	12.44	4.06	5.02	6.42	7.53
10	5.33	6.45	12.43	4.06	5.02	6.42	7.54
11	5.32	6.44	12.43	4.05	5.02	6.42	7.54
12	5.32	6.43	12.43	4.05	5.02	6.42	7.54
13	5.31	6.43	12.43	4.05	5.02	6.42	7.54
14	5.30	6.42	12.42	4.05	5.02	6.43	7.54
15	5.29	6.41	12.42	4.04	5.02	6.43	7.55
16	5.29	6.40	12.42	4.04	5.02	6.43	7.55
17	5.28	6.40	12.41	4.04	5.02	6.43	7.55
18	5.27	6.39	12.41	4.03	5.02	6.43	7.55
19	5.26	6.38	12.41	4.03	5.02	6.44	7.55
20	5.26	6.37	12.41	4.03	5.02	6.44	7.56
21	5.25	6.37	12.40	4.02	5.02	6.44	7.56
22	5.24	6.36	12.40	4.02	5.02	6.44	7.56
23	5.23	6.35	12.40	4.01	5.02	6.44	7.56
24	5.22	6.34	12.39	4.01	5.02	6.45	7.56
25	5.21	6.34	12.39	4.01	5.02	6.45	7.57
26	5.21	6.33	12.39	4.00	5.02	6.45	7.57
27	5.20	6.32	12.38	4.00	5.02	6.45	7.57
28	5.19	6.31	12.38	3.59	5.01	6.45	7.57
29	5.18	6.30	12.38	3.59	5.01	6.45	7.58
30	5.17	6.30	12.38	3.58	5.01	6.46	7.58
31	5.16	6.29	12.37	3.58	5.01	6.46	7.58

APRIL एप्रिल

DATE तारीख	SUBH SADIQ सुबह सादिक	TULU तुलुअ	NISFUN NAHAR निस्फुन नहार	ASR SHAFAI अस्र शाफी	ASR HANAFI अस्र हनफी	GURUB गुरुब	ISHA ईशा
1	5.16	6.28	12.37	3.58	5.01	6.46	7.58
2	5.15	6.27	12.37	3.57	5.01	6.46	7.59
3	5.14	6.27	12.36	3.57	5.01	6.46	7.59
4	5.13	6.26	12.36	3.56	5.01	6.46	7.59
5	5.12	6.25	12.36	3.56	5.00	6.47	7.59
6	5.11	6.24	12.36	3.55	5.00	6.47	8.00
7	5.11	6.23	12.35	3.54	5.00	6.47	8.00
8	5.10	6.23	12.35	3.54	5.00	6.47	8.00
9	5.09	6.22	12.35	3.53	5.00	6.47	8.00
10	5.08	6.21	12.34	3.53	5.00	6.48	8.01
11	5.07	6.21	12.34	3.52	4.59	6.48	8.01
12	5.06	6.20	12.34	3.52	4.59	6.48	8.01
13	5.06	6.19	12.34	3.51	4.59	6.48	8.02
14	5.05	6.18	12.33	3.51	4.59	6.48	8.02
15	5.04	6.18	12.33	3.50	4.59	6.48	8.02
16	5.03	6.17	12.33	3.50	4.59	6.49	8.03
17	5.02	6.16	12.33	3.49	4.59	6.49	8.03
18	5.02	6.16	12.32	3.48	4.58	6.49	8.03
19	5.01	6.15	12.32	3.48	4.58	6.49	8.04
20	5.00	6.14	12.32	3.47	4.58	6.50	8.04
21	4.59	6.14	12.32	3.47	4.58	6.50	8.04
22	4.58	6.13	12.31	3.46	4.58	6.50	8.05
23	4.58	6.12	12.31	3.46	4.58	6.50	8.05
24	4.57	6.12	12.31	3.45	4.57	6.50	8.05
25	4.56	6.11	12.31	3.44	4.57	6.51	8.06
26	4.55	6.11	12.31	3.44	4.57	6.51	8.06
27	4.55	6.10	12.31	3.43	4.57	6.51	8.07
28	4.54	6.09	12.30	3.43	4.57	6.51	8.07
29	4.53	6.09	12.30	3.42	4.57	6.52	8.07
30	4.53	6.08	12.30	3.42	4.57	6.52	8.08

MAY मई

DATE तारीख	SUBH SADIQ सुबह सादिक	TULU तुलुअ	NISFUN NAHAR निस्फुन नहार	ASR SHAFAI अस्र शाफी	ASR HANAFI अस्र हनफी	GURUB गुरुब	ISHA ईशा
1	4.52	6.08	12.30	3.41	4.57	6.52	8.08
2	4.51	6.07	12.30	3.41	4.56	6.53	8.09
3	4.50	6.07	12.30	3.40	4.56	6.53	8.09
4	4.50	6.06	12.30	3.40	4.56	6.53	8.09
5	4.49	6.06	12.30	3.39	4.56	6.53	8.10
6	4.49	6.05	12.29	3.38	4.56	6.54	8.10
7	4.48	6.05	12.29	3.38	4.56	6.54	8.11
8	4.47	6.04	12.29	3.38	4.56	6.54	8.11
9	4.47	6.04	12.29	3.39	4.57	6.55	8.12
10	4.46	6.04	12.29	3.40	4.57	6.55	8.12
11	4.46	6.03	12.29	3.40	4.57	6.55	8.13
12	4.45	6.03	12.29	3.41	4.58	6.55	8.13
13	4.45	6.02	12.29	3.42	4.58	6.56	8.14
14	4.44	6.02	12.29	3.42	4.58	6.56	8.14
15	4.44	6.02	12.29	3.43	4.59	6.56	8.15
16	4.43	6.01	12.29	3.43	4.59	6.57	8.15
17	4.43	6.01	12.29	3.44	5.00	6.57	8.16
18	4.42	6.01	12.29	3.44	5.00	6.57	8.16
19	4.42	6.01	12.29	3.45	5.00	6.58	8.17
20	4.41	6.00	12.29	3.46	5.01	6.58	8.17
21	4.41	6.00	12.29	3.46	5.01	6.58	8.17
22	4.41	6.00	12.29	3.47	5.01	6.59	8.18
23	4.40	6.00	12.29	3.47	5.02	6.59	8.18
24	4.40	5.59	12.29	3.48	5.02	7.00	8.19
25	4.40	5.59	12.30	3.48	5.03	7.00	8.19
26	4.39	5.59	12.30	3.49	5.03	7.00	8.20
27	4.39	5.59	12.30	3.49	5.03	7.01	8.20
28	4.39	5.59	12.30	3.50	5.04	7.01	8.21
29	4.39	5.59	12.30	3.50	5.04	7.01	8.21
30	4.38	5.59	12.30	3.51	5.04	7.02	8.22
31	4.38	5.59	12.30	3.51	5.05	7.02	8.22

JUNE जुन

DATE तारीख	SUBH SADIQ सुबह सादिक	TULU तुलुअ	NISFUN NAHAR निस्फुन नहार	ASR SHAFAI अस्र शाफी	ASR HANAFI अस्र हनफी	GURUB गुरुब	ISHA ईशा
1	4.38	5.59	12.30	3.52	5.05	7.02	8.23
2	4.38	5.58	12.31	3.52	5.05	7.03	8.23
3	4.38	5.58	12.31	3.52	5.06	7.03	8.24
4	4.38	5.58	12.31	3.53	5.06	7.03	8.24
5	4.38	5.58	12.31	3.53	5.06	7.04	8.24
6	4.38	5.58	12.31	3.54	5.07	7.04	8.25
7	4.38	5.58	12.31	3.54	5.07	7.04	8.25
8	4.38	5.59	12.32	3.54	5.07	7.05	8.26
9	4.37	5.59	12.32	3.55	5.08	7.05	8.26
10	4.37	5.59	12.32	3.55	5.08	7.05	8.26
11	4.38	5.59	12.32	3.56	5.08	7.06	8.27
12	4.38	5.59	12.32	3.56	5.09	7.06	8.27
13	4.38	5.59	12.33	3.56	5.09	7.06	8.28
14	4.38	5.59	12.33	3.57	5.09	7.06	8.28
15	4.38	5.59	12.33	3.57	5.10	7.07	8.28
16	4.38	5.59	12.33	3.57	5.10	7.07	8.28
17	4.38	6.00	12.33	3.57	5.10	7.07	8.29
18	4.38	6.00	12.34	3.58	5.10	7.08	8.29
19	4.38	6.00	12.34	3.58	5.11	7.08	8.29
20	4.39	6.00	12.34	3.58	5.11	7.08	8.30
21	4.39	6.00	12.34	3.58	5.11	7.08	8.30
22	4.39	6.01	12.35	3.59	5.11	7.08	8.30
23	4.39	6.01	12.35	3.59	5.11	7.09	8.30
24	4.40	6.01	12.35	3.59	5.12	7.09	8.30
25	4.40	6.01	12.35	3.59	5.12	7.09	8.31
26	4.40	6.02	12.35	3.59	5.12	7.09	8.31
27	4.40	6.02	12.36	4.00	5.12	7.09	8.31
28	4.41	6.02	12.36	4.00	5.12	7.10	8.31
29	4.41	6.02	12.36	4.00	5.12	7.10	8.31
30	4.41	6.03	12.36	4.00	5.13	7.10	8.31

JULY जुलाई

DATE तारीख	SUBH SADIQ सुबह सादिक	TULU तुलुअ	NISFUN NAHAR निस्फुन नहार	ASR SHAFAI अस्र शाफी	ASR HANAFI अस्र हनफी	GURUB गुरुब	ISHA ईशा
1	4.42	6.03	12.36	4.00	5.13	7.10	8.31
2	4.42	6.03	12.37	4.00	5.13	7.10	8.31
3	4.42	6.04	12.37	4.00	5.13	7.10	8.31
4	4.43	6.04	12.37	4.00	5.13	7.10	8.31
5	4.43	6.04	12.37	4.00	5.13	7.10	8.31
6	4.44	6.04	12.37	4.00	5.13	7.10	8.31
7	4.44	6.05	12.37	4.00	5.13	7.10	8.31
8	4.44	6.05	12.38	4.00	5.13	7.10	8.31
9	4.45	6.05	12.38	4.00	5.13	7.10	8.31
10	4.45	6.06	12.38	4.00	5.13	7.10	8.31
11	4.46	6.06	12.38	3.59	5.13	7.10	8.31
12	4.46	6.06	12.38	3.59	5.13	7.10	8.30
13	4.46	6.07	12.38	3.59	5.13	7.10	8.30
14	4.47	6.07	12.38	3.59	5.13	7.10	8.30
15	4.47	6.07	12.39	3.59	5.13	7.10	8.30
16	4.48	6.08	12.39	3.58	5.12	7.10	8.30
17	4.48	6.08	12.39	3.58	5.12	7.10	8.29
18	4.49	6.08	12.39	3.58	5.12	7.09	8.29
19	4.49	6.09	12.39	3.57	5.12	7.09	8.29
20	4.50	6.09	12.39	3.57	5.12	7.09	8.28
21	4.50	6.09	12.39	3.57	5.11	7.09	8.28
22	4.51	6.10	12.39	3.56	5.11	7.09	8.28
23	4.51	6.10	12.39	3.56	5.11	7.08	8.27
24	4.52	6.10	12.39	3.55	5.11	7.08	8.27
25	4.52	6.11	12.39	3.55	5.10	7.08	8.26
26	4.52	6.11	12.39	3.54	5.10	7.08	8.26
27	4.53	6.11	12.39	3.54	5.10	7.07	8.26
28	4.53	6.12	12.39	3.53	5.09	7.07	8.25
29	4.54	6.12	12.39	3.53	5.09	7.07	8.25
30	4.54	6.12	12.39	3.52	5.09	7.06	8.24
31	4.55	6.13	12.39	3.52	5.08	7.06	8.24

AUGUST अगस्त

DATE तारीख	SUBH SADIQ सुबह सादिक	TULU तुलुअ	NISFUN NAHAR निस्फुन नहार	ASR SHAFAI अस्र शाफी	ASR HANAFI अस्र हनफी	GURUB गुरुब	ISHA ईशा
1	4.55	6.13	12.39	3.51	5.08	7.05	8.23
2	4.56	6.13	12.39	3.50	5.07	7.05	8.23
3	4.56	6.13	12.39	3.49	5.07	7.05	8.22
4	4.57	6.14	12.39	3.49	5.06	7.04	8.21
5	4.57	6.14	12.39	3.48	5.06	7.04	8.21
6	4.57	6.14	12.39	3.47	5.05	7.03	8.20
7	4.58	6.14	12.39	3.48	5.05	7.03	8.19
8	4.58	6.15	12.39	3.48	5.05	7.02	8.19
9	4.59	6.15	12.38	3.48	5.05	7.02	8.18
10	4.59	6.15	12.38	3.49	5.05	7.01	8.18
11	4.59	6.15	12.38	3.49	5.05	7.01	8.17
12	5.00	6.16	12.38	3.49	5.04	7.00	8.16
13	5.00	6.16	12.38	3.49	5.04	7.00	8.15
14	5.01	6.16	12.38	3.50	5.04	6.59	8.15
15	5.01	6.16	12.37	3.50	5.04	6.58	8.14
16	5.01	6.17	12.37	3.50	5.04	6.58	8.13
17	5.02	6.17	12.37	3.50	5.03	6.57	8.12
18	5.02	6.17	12.37	3.50	5.03	6.57	8.12
19	5.02	6.17	12.37	3.51	5.03	6.56	8.11
20	5.03	6.17	12.36	3.51	5.03	6.55	8.10
21	5.03	6.18	12.36	3.51	5.02	6.55	8.09
22	5.03	6.18	12.36	3.51	5.02	6.54	8.09
23	5.04	6.18	12.36	3.51	5.02	6.53	8.08
24	5.04	6.18	12.35	3.51	5.01	6.53	8.07
25	5.04	6.18	12.35	3.51	5.01	6.52	8.06
26	5.04	6.19	12.35	3.51	5.01	6.51	8.05
27	5.05	6.19	12.35	3.51	5.00	6.50	8.04
28	5.05	6.19	12.34	3.51	5.00	6.50	8.04
29	5.05	6.19	12.34	3.51	5.00	6.49	8.03
30	5.06	6.19	12.34	3.51	4.59	6.48	8.02
31	5.06	6.19	12.33	3.51	4.59	6.48	8.01

SEPTEMBER — सितंबर

DATE तारीख	SUBH SADIQ सुबह सादिक	TULU तुलुअ	NISFUN NAHAR निस्फुन नहार	ASR SHAFAI अस्र शाफी	ASR HANAFI अस्र हनफी	GURUB गुरुब	ISHA ईशा
1	5.06	6.19	12.33	3.51	4.58	6.47	8.00
2	5.06	6.20	12.33	3.51	4.58	6.46	7.59
3	5.07	6.20	12.32	3.51	4.58	6.45	7.58
4	5.07	6.20	12.32	3.51	4.57	6.44	7.57
5	5.07	6.20	12.32	3.51	4.57	6.44	7.57
6	5.07	6.20	12.31	3.51	4.56	6.43	7.56
7	5.07	6.20	12.31	3.51	4.56	6.42	7.55
8	5.08	6.20	12.31	3.51	4.55	6.41	7.54
9	5.08	6.20	12.30	3.51	4.55	6.40	7.53
10	5.08	6.21	12.30	3.50	4.54	6.40	7.52
11	5.08	6.21	12.30	3.50	4.54	6.39	7.51
12	5.08	6.21	12.29	3.50	4.53	6.38	7.50
13	5.09	6.21	12.29	3.50	4.53	6.37	7.50
14	5.09	6.21	12.29	3.50	4.52	6.36	7.49
15	5.09	6.21	12.28	3.49	4.52	6.36	7.48
16	5.09	6.21	12.28	3.49	4.51	6.35	7.47
17	5.09	6.21	12.28	3.49	4.51	6.34	7.46
18	5.09	6.21	12.27	3.49	4.50	6.33	7.45
19	5.10	6.22	12.27	3.49	4.49	6.32	7.44
20	5.10	6.22	12.27	3.48	4.49	6.31	7.43
21	5.10	6.22	12.26	3.48	4.48	6.31	7.43
22	5.10	6.22	12.26	3.48	4.48	6.30	7.42
23	5.10	6.22	12.26	3.47	4.47	6.29	7.41
24	5.10	6.22	12.25	3.47	4.47	6.28	7.40
25	5.10	6.22	12.25	3.47	4.46	6.27	7.39
26	5.11	6.22	12.24	3.47	4.45	6.27	7.38
27	5.11	6.23	12.24	3.46	4.45	6.26	7.37
28	5.11	6.23	12.24	3.46	4.44	6.25	7.37
29	5.11	6.23	12.23	3.46	4.44	6.24	7.36
30	5.11	6.23	12.23	3.45	4.43	6.23	7.35

OCTOBER — अक्तुबर

DATE तारीख	SUBH SADIQ सुबह सादिक	TULU तुलुअ	NISFUN NAHAR निस्फुन नहार	ASR SHAFAI अस्र शाफी	ASR HANAFI अस्र हनफी	GURUB गुरुब	ISHA ईशा
1	5.11	6.23	12.23	3.45	4.42	6.22	7.34
2	5.11	6.23	12.22	3.45	4.42	6.22	7.33
3	5.12	6.23	12.22	3.44	4.41	6.21	7.33
4	5.12	6.24	12.22	3.44	4.41	6.20	7.32
5	5.12	6.24	12.22	3.44	4.40	6.19	7.31
6	5.12	6.24	12.21	3.43	4.39	6.19	7.30
7	5.12	6.24	12.21	3.43	4.39	6.18	7.30
8	5.12	6.24	12.21	3.43	4.38	6.17	7.29
9	5.12	6.24	12.20	3.42	4.38	6.16	7.28
10	5.13	6.25	12.20	3.42	4.37	6.16	7.28
11	5.13	6.25	12.20	3.42	4.36	6.15	7.27
12	5.13	6.25	12.20	3.41	4.36	6.14	7.26
13	5.13	6.25	12.19	3.41	4.35	6.13	7.25
14	5.13	6.25	12.19	3.40	4.35	6.13	7.25
15	5.13	6.26	12.19	3.40	4.34	6.12	7.24
16	5.14	6.26	12.19	3.40	4.34	6.11	7.24
17	5.14	6.26	12.18	3.39	4.33	6.11	7.23
18	5.14	6.26	12.18	3.39	4.32	6.10	7.22
19	5.14	6.27	12.18	3.39	4.32	6.09	7.22
20	5.14	6.27	12.18	3.38	4.31	6.09	7.21
21	5.15	6.27	12.18	3.38	4.31	6.08	7.21
22	5.15	6.27	12.17	3.38	4.30	6.08	7.20
23	5.15	6.28	12.17	3.37	4.30	6.07	7.20
24	5.15	6.28	12.17	3.37	4.29	6.06	7.19
25	5.15	6.28	12.17	3.37	4.29	6.06	7.19
26	5.16	6.29	12.17	3.37	4.28	6.05	7.18
27	5.16	6.29	12.17	3.36	4.28	6.05	7.18
28	5.16	6.29	12.17	3.36	4.28	6.04	7.17
29	5.16	6.30	12.17	3.36	4.27	6.04	7.17
30	5.17	6.30	12.17	3.35	4.27	6.03	7.16
31	5.17	6.30	12.16	3.35	4.26	6.03	7.16

NOVEMBER — नवंबर

DATE तारीख	SUBH SADIQ सुबह सादिक	TULU तुलुअ	NISFUN NAHAR निस्फुन नहार	ASR SHAFAI अस्र शाफी	ASR HANAFI अस्र हनफी	GURUB गुरुब	ISHA ईशा
1	5.17	6.31	12.16	3.35	4.26	6.02	7.16
2	5.17	6.31	12.16	3.35	4.25	6.02	7.15
3	5.18	6.31	12.16	3.35	4.25	6.01	7.15
4	5.18	6.32	12.16	3.34	4.25	6.01	7.15
5	5.18	6.32	12.16	3.34	4.24	6.01	7.14
6	5.19	6.33	12.16	3.34	4.24	6.00	7.14
7	5.19	6.33	12.16	3.34	4.24	6.00	7.14
8	5.19	6.33	12.17	3.34	4.23	6.00	7.14
9	5.20	6.34	12.17	3.33	4.23	5.59	7.14
10	5.20	6.34	12.17	3.33	4.23	5.59	7.13
11	5.20	6.35	12.17	3.33	4.23	5.59	7.13
12	5.21	6.35	12.17	3.33	4.22	5.58	7.13
13	5.21	6.36	12.17	3.33	4.22	5.58	7.13
14	5.21	6.36	12.17	3.33	4.22	5.58	7.13
15	5.22	6.37	12.17	3.33	4.22	5.58	7.13
16	5.22	6.37	12.17	3.33	4.22	5.58	7.13
17	5.23	6.38	12.18	3.33	4.22	5.57	7.13
18	5.23	6.38	12.18	3.33	4.21	5.57	7.13
19	5.23	6.39	12.18	3.33	4.21	5.57	7.13
20	5.24	6.39	12.18	3.33	4.21	5.57	7.13
21	5.24	6.40	12.18	3.33	4.21	5.57	7.13
22	5.25	6.40	12.19	3.33	4.21	5.57	7.13
23	5.25	6.41	12.19	3.33	4.21	5.57	7.13
24	5.26	6.41	12.19	3.33	4.21	5.57	7.13
25	5.26	6.42	12.20	3.33	4.21	5.57	7.13
26	5.27	6.43	12.20	3.33	4.21	5.57	7.13
27	5.27	6.43	12.20	3.33	4.21	5.57	7.13
28	5.28	6.44	12.20	3.33	4.21	5.57	7.13
29	5.28	6.44	12.21	3.34	4.21	5.57	7.14
30	5.29	6.45	12.21	3.34	4.22	5.57	7.14

DECEMBER — डिसंबर

DATE तारीख	SUBH SADIQ सुबह सादिक	TULU तुलुअ	NISFUN NAHAR निस्फुन नहार	ASR SHAFAI अस्र शाफी	ASR HANAFI अस्र हनफी	GURUB गुरुब	ISHA ईशा
1	5.29	6.45	12.22	3.34	4.22	5.58	7.14
2	5.30	6.46	12.22	3.34	4.22	5.58	7.14
3	5.30	6.47	12.22	3.34	4.22	5.58	7.14
4	5.31	6.47	12.23	3.35	4.22	5.58	7.15
5	5.31	6.48	12.23	3.35	4.22	5.58	7.15
6	5.32	6.48	12.23	3.35	4.23	5.59	7.15
7	5.32	6.49	12.24	3.36	4.23	5.59	7.16
8	5.33	6.50	12.24	3.36	4.23	5.59	7.16
9	5.33	6.50	12.25	3.36	4.23	5.59	7.16
10	5.34	6.51	12.25	3.37	4.24	6.00	7.17
11	5.34	6.51	12.26	3.37	4.24	6.00	7.17
12	5.35	6.52	12.26	3.37	4.24	6.00	7.17
13	5.35	6.52	12.27	3.38	4.25	6.01	7.18
14	5.36	6.53	12.27	3.38	4.25	6.01	7.18
15	5.36	6.54	12.28	3.38	4.26	6.01	7.19
16	5.37	6.54	12.28	3.39	4.26	6.02	7.19
17	5.37	6.55	12.28	3.39	4.26	6.02	7.20
18	5.38	6.55	12.29	3.40	4.27	6.03	7.20
19	5.38	6.56	12.29	3.40	4.27	6.03	7.21
20	5.39	6.56	12.30	3.41	4.28	6.04	7.21
21	5.39	6.57	12.30	3.41	4.28	6.04	7.21
22	5.40	6.57	12.31	3.42	4.29	6.05	7.22
23	5.40	6.58	12.31	3.42	4.29	6.05	7.22
24	5.41	6.58	12.32	3.43	4.30	6.06	7.23
25	5.41	6.59	12.32	3.43	4.30	6.06	7.23
26	5.42	6.59	12.33	3.44	4.31	6.07	7.24
27	5.42	7.00	12.33	3.44	4.31	6.07	7.25
28	5.43	7.00	12.34	3.45	4.32	6.08	7.25
29	5.43	7.00	12.34	3.45	4.32	6.08	7.26
30	5.44	7.01	12.35	3.46	4.33	6.09	7.26
31	5.44	7.01	12.35	3.46	4.34	6.10	7.27

हिदायात पढकर तक़वीम पर अमल करें।

मुकर्रा औक़ात सांगली, मिरज, उदगांव और अतराफ के लिये है।

मिरज	0	पन्हाळा	+2	आथणी	-2
सांगली	0	शाहुवाडी	+3	महालिंगपूर	-2
जयसिंगपूर	0	राधानगरी	+3	जमखंडी	-2
तासगांव	0	कणकवली	+4	मुधोळ	-2
विटा	+1	संगमेश्वर	+5	तेरदाळ	-2
इचलकरंजी	+1	राजापूर	+5	सावळगी	-2
भिलवडी	+1	लांजा	+5	तिकोटा	-3
ताकारी	+1	देवगड	+5	बिजापूर	-4
रुकडी	+1	विजयदुर्ग	+6	कोल्हार	-4
किर्लोस्करवाडी	+1	रत्नागिरी	+6	अलमट्टी	-5
हातकणंगले	+1	निपाणी	+1	बसवन भागेवाडी	-5
आष्टा	+1	संकेश्वर	+1	मुद्देबिहाळ	-6
कागल	+2	चिकोडी	0	सिंदगी	-6
इस्लामपूर	+2	शिरोळ	0	आलमेल	-6
कोल्हापूर	+2	रायबाग	0	क.महांकाळ	-1
कराड	+2	उगारखुर्द	0	जत	-2
शिराळा	+2	कुडची	0		

सस्ता सौदा

क्या आप दुनिया में रहते हुये अपने लिये जन्नत में महल बनाना चाहें गे ?

तो नबी करीम (स्व.) का इर्शादे गिरामी सुनें : عَنْ عُثْمَانَ بْنِ عَفَّانَ رضي الله عنه قَالَ

قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: ”مَنْ بَنٰى لِلّٰهِ مَسْجِدًا بَنَى اللّٰهُ لَهُ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ“

हज़रत उस्मान रजि. से मरवी है वो फर्माते हैं के रसुलुल्लाह स्व. ने इर्शाद फर्माया : के जिस शख्स ने अल्लाह तआला के लिये मस्जिद बनाई अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त उस के लिये जन्नत में शानदार महल बनायें गे । (मुआरिफुल हदीस १८१/३)

सुन्नतों की अहमियत व फ़ज़ीलत

हदीस शरीफ में है : ”مَنْ حَفِظَ سُنَّتِيْ أَكْرَمَهُ اللّٰهُ بِأَرْبَعِ خِصَالٍ

اَلْمَحَبَّةُ فِيْ قُلُوْبِ الْبَرَرَةِ وَالْهَيْبَةُفِيْ قُلُوْبِ الْفَجَرَةِوَالسَّعَةُفِي الرِّزْقِ

وَالثِّقَةُ فِي الدِّيْنِ“ यानी जिस ने मेरी सुन्नत की हिफाज़त की और उस पर अमल किया तो अल्लाह तआला चार बातों से उसका एज़ाज़ व इकराम करें गे । (१) नेक लोगों के दिलों में इस की मोहब्बत पैदा करेंगे । (२) फाजिर व बदकार लोगों के दिलों में उस की हैबत डाल दें गे । (३) रिज़्क फराख और वसीअ कर देंगे । (४) दीन में पुख्तगी नसीब फरमा देंगे । (फतावा रहीमिया : १९४/२)

सुन्नतों को हलका समझने का अंजाम :

तफ्सीर अज़ीज़ी में है : ”مَنْ تَهَاوَنَ بِالْآدَابِ عُوْقِبَ بِحِرْمَانِ السُّنَّةِ

وَمَنْ تَهَاوَنَ بِالسُّنَّةِ عُوْقِبَ بِحِرْمَانِ الْفَرَائِضِ وَمَنْ تَهَاوَنَ بِالْفَرَائِضِ

عُوْقِبَ بِحِرْمَانِ الْمَعْرِفَةِ“ यानी जो शख्स आदाब में सुस्ती करता है वो सुन्नत से महरुमी की बला में गिरफ्तार किया जाता है और जो सुन्नत में सुस्ती करता है और उसे हलका समझता है वो फराईज़ के छुटने की मुसीबत में मुबतला होता है और जो फराईज़ मे सुस्ती करता है और उनको हलका समझता है तो वो मारिफते इलाही से महरुम रहता है । (फतावा रहीमिया : १९५/२)

• जामिया से छपी हुई दिगर किताबें •
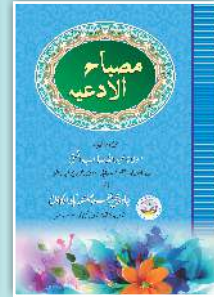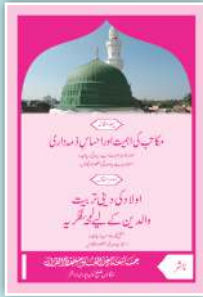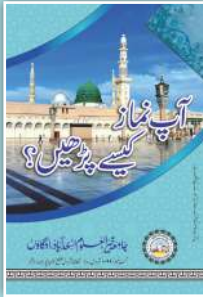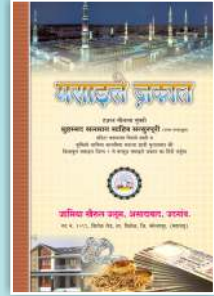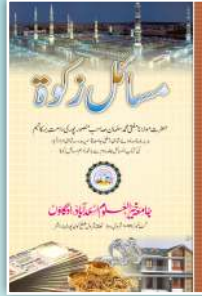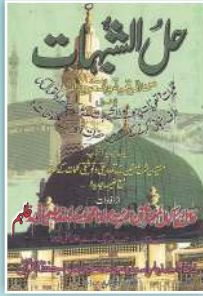
• मिलनेका पता •

जामिया खैरुल उलूम, असादाबाद, उदगांव.

गट नं. १०९९, शिरोळ रोड, ता. शिरोळ, ज़ि. कोल्हापूर. (महाराष्ट्र)